जनवरी २००७

दादावाणी

श्री सांईबाबा
तथा
आनेवाली चोविसी के प्रथम तीर्थंकर
श्री पद्मनाभ प्रभु के
प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव का
अडालज त्रिमंदीर में भव्य समारोह संपन...

कीमत - रू. १०

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्षः २, अंक : ३
अखंड क्रमांक : १५
जनवरी २००७

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)२३९७४१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (०७९)
२७५४०४०८, २७५४३९७९
मुंबई : (०२२) २४१३७६१६
वडोदरा : (०२६५) २६४४४६५
सुरत : (०२६१) २५४४९६४
राजकोट : (०२८१) २४६८८३०
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 020-8204-0746
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org
www.ultimatespirituality.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता फी)

१५ साल का

भारत :	८०० रूपया
यु.एस.ए. :	१०० डॉलर
यु.के. :	७५ पाउन्ड

वार्षिक

भारत :	१०० रूपया
यु.एस.ए. :	10 डॉलर
यु.के. :	7 पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से भेजे।

दादावाणी

ज्ञानी बनाये विकारी से निर्विकारी

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) के अक्रम विज्ञान में (ज्ञानविधि से) दो घंटे में ही 'आत्म दृष्टि' प्राप्त होती है। उसके बाद ही सही मानों में ब्रह्मचर्य पालन शुरू होता है। आत्म ज्ञान की प्राप्ति से जागृति उत्पन्न होती है। जागृति से यथातथ्य देखना प्रारंभ होता है। आरपार देखना शुरू होते ही वैराग्य उत्पन्न होने से ही वीतराग होना संभव है। जागृति की मंदता होने पर मोह उत्पन्न होता है। मूलतः खुद विषयी होने के कारण उसे कपड़े, स्त्री आदि बाह्य निमित्त मोह करवाते हैं। जब खुद की दृष्टि शुद्ध होती है, फिर कहीं भी मोह का कोई कारण नहीं रहता है।

वर्तमान में दृष्टिदोष भयंकर गुनाह है। जहाँ कहीं दृष्टिदोष हो जाये उसी क्षण, उस व्यक्ति के शुद्धात्मा के पास ब्रह्मचर्य के लिये शक्ति माँगना कि, 'हे! शुद्धात्मा भगवान, मुझे सारे संसार के साथ ब्रह्मचर्य पालन की शक्ति दीजिये।' काल ही ऐसा है कि दृष्टि करते ही दृष्टिदोष हो जाये। इसलिये 'शुद्धात्मानुभव के अलावा मुझे संसार की किसी चीज़ की कामना नहीं है' ऐसा भाव निश्चित करके और उसे सिन्सियर रहकर आगे बढ़ा जा सकता है।

दृष्टिदोष क्यों हो जाता है? क्योंकि जागृति नहीं रह पाती। ज्ञानी पुरुष पूज्य दादाजी कहते हैं कि, ''हमें निरंतर 'श्री विझन' रहता है। चमडी की चद्दर में बंधा माँस ही है, फिर मोह कैसे उत्पन्न होगा?''

विषय विचार की कोंपल फूटते ही निकाल फेंके, जरा-सा भी आकर्षण होने पर उसका कड़ा प्रतिरोध करें और बहुत प्रतिक्रमण करें, परजाति का स्पर्श होते ही ज़हर जैसा लगे, तभी ब्रह्मचर्य की रक्षा हो सकती है। आचरण की क्षति तो किसी भी रूप में क्षम्य नहीं है, ऐसी क्षतियाँ तो एक बार अहंकार करके भी खतम कर देनी चाहिए, वर्ना ऐसा करना तो सत्संग के साथ विश्वासघात, ज्ञान के साथ विश्वासघात होता है, उसके लिये तो भयंकर दंड भुगतना पडे, मोक्ष तो एक ओर रहा पर संसार में भी बहुत दुःख होता है। जिसने ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया, व्यवहार चारित्र्य ग्रहण किया, उसके आत्मानंद का तो कोई पार ही नहीं रहता।

प्रस्तुत अंक में विषयविकार से मुक्त होकर, निर्विकार होकर, चारित्र्य ग्रहण करके शीलवान होने संबंधी बहुत सारी समझदारियों का संकलन किया गया है। जो साधक को ब्रह्मचर्य के लिये जागृति की वृद्धि हेतु उपकारक सिद्ध होगा, इसी अभ्यर्थना के साथ।

दीपक देसाई ....

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रुपांतर है। कोष्ठक में दिये गये शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किये गये वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पायें तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिये हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी बनाये विकारी से निर्विकारी

सही ब्रह्मचर्य, जागृति के आधार पर

प्रश्नकर्ता : स्त्री-पुरुष का भेद तो भूलना होगा न?

दादाश्री : भेद नहीं भूलना है। भेद तो हमें मूर्च्छा के कारण लगता है और ऐसे भूलने से भूलाया जा सके ऐसा नहीं है। उसके लिये जागना पड़ेगा, मतलब ऐसी जागृति चाहिए।

यह ज्ञान प्राप्त हुआ यानी आत्मदृष्टि हुई न! अब इस ज्ञान से जागृति बढ़ेगी और जागृति बढ़ने के कारण आरपार दिखाई देगा। आरपार दिखाई देने पर अपने आप ही वैराग्य पैदा होता है। दिखाई दिया मतलब वैराग्य आयेगा ही और तभी वीतराग होना संभव है वर्ना कोई वीतराग हो सकता है कभी? और वास्तव में एक्झेक्ट ऐसा ही है।

'फूल' (पूर्ण) जागृति हो, तब वह जागृति ही केवलज्ञान में परिणमित होती है।

प्रश्नकर्ता : ब्रह्मचर्य पालन का निश्चय होता है, तभी से ही जागृति बढ़ जाती है न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है, जागृति तो, हम ज्ञान प्रदान करते हैं, तभी जागृति उत्पन्न होती है। जागृति के लिये और कोई उपाय ही नहीं है। ये बाहर के लोग तो ब्रह्मचर्य पालते ही हैं न, मगर उसमें जागृति नहीं होती।

विकारी दृष्टि से कपड़ों का मोह

(ज्ञान प्राप्ति के बाद) 'ब्रह्मचर्य' इस जागृति के आधार पर है और जागृति डिम (मंद) होने पर मोह उत्पन्न होता है, वर्ना इस देह में हड्डियाँ, पीब और माँस नहीं भरे क्या?

प्रश्नकर्ता : यानी यह विषय के मामले में मोह कपडों को लेकर उत्पन्न होता है न? दृष्टि जहाँ पड़ती है वह पहले तो कपडों पर ही पड़ती है न? इसलिये मोह वहीं से उत्पन्न होता है न?

दादाश्री : मूलत: तो खुद विषयी है, इसलिये कपड़े अधिक मोह करवाते हैं। यदि खुद विषयी नहीं होता तो कपड़े कोई मोह नहीं करवानेवाले। यहाँ पर अच्छे-अच्छे कपड़े बिछा दें, तो उनसे मोह होगा क्या? मतलब खुद को विषय में मज़ा, आनंद आता है, उसकी इच्छा है, इसलिये वह मोह उत्पन्न होता है। जिन्हें विषय की इच्छा नहीं है ऐसे लोगों को मोह कैसे उत्पन्न होगा? यह मोह कौन पैदा करता है? पिछले (जन्मों के बंधे हुए हिसाब के) परिणाम मोह पैदा करते हैं। इसलिये हमें उसे धो डालना है। इसमें बेचारे कपड़ों का क्या कसूर? पहले जो बीज बोया था उसका यह परिणाम आया है। मगर ऐसा मोह सब के ऊपर नहीं होता। जहाँ हिसाब होता है वहीं मोह होता है। अन्यत्र मोह के नये बीज पडेंगे जरूर, पर वर्तमान में उस जगह मोह नहीं होगा। यह तो कपड़ों को लेकर मोह उत्पन्न होता है वर्ना कपड़े उतार देने पर ज्यादातर मोह कम हो जाता है। ऊँची ज्ञातियों में इस दृष्टि से मोह कम हो जाये। बेचारों को कपड़ो के कारण भ्राँति बनी रहती है और बिना कपड़ों के देखने पर बिना कुछ किये वैराग्य आ जाये। इसलिये दिगंबरों (यह जैन संप्रदाय है दिगंबर नाम से, उनके साधु संपूर्ण वस्त्रो का त्याग करते है।) की खोजबीन है न!

किसी को मोह होने में निमित्त गुनहगार

यदि हमने सुंदर कपडे पहने हो तो किसी को मोह होगा न? वह किसका गुनाह कहलायेगा? यानी हमारे ऊपर किसी को मोह हुआ, तो वह हमारा ही गुनाह है। इसलिये वीतराग कहते है कि, '(संसार में से) भाग जाइये, हमसे सामनेवाले को मोह हो जाता है और वह बेचारा दु:खी होता है, तो ऐसा हमारे निमित्त ही हुआ न?' यानी यह वीतरागों का विज्ञान कैसा होगा? ये वीतराग कितने सयाने होंगे? आपको कैसे लगते हैं? सयाने नहीं लगते क्या? सामनेवाले को दु:ख नहीं हो, इसलिये खुद के बाल नोच डालें।

साधु-आचार्य महाराज रूपवान होते हुए भी सिर पर बाल बढ़ाकर रूप का प्रदर्शन नहीं करते पर रूप को कैसे दबाया जाये इसकी खोज में लगे रहते हैं। दाढ़ी बढाया करें, लुंचन करें, ऐसा करें, वैसा करें। मगर वे लोग बड़ी जागृति के साथ रहेंगे। क्योंकि वे समझते है कि, 'मेरे रूप से किसी को दु:ख पहुँचेगा।'

प्रश्नकर्ता : किसी को सुख भी पहुँचे न?

दादाश्री : जिसे सुख पहुँचा है उसको परिणाम दु:ख में आनेवाला ही हैं, क्योंकि उसका परिणाम दु:खदायी है। मतलब उससे सुख हुआ तब भी उसका परिणाम तो दु:खदायी ही है।

वर्तमान में तो मनुष्यों को रूप ही नहीं होता। जो थोड़ा बहुत रूप होता है वह भी अहंकार को लेकर कुरूप दिखता है।

गोरी चमड़ी, मोही माल

प्रश्नकर्ता : मोह अधिक किसको होता है? गोरी चमड़ीवाले को या काली चमड़ीवाले को?

दादाश्री : गोरी चमड़ीवाले को। जिसकी गोरी चमड़ी है उसे समझ लेना चाहिए कि लोगों के हाथों (कि दृष्टि से) वह अधिक भुगता जायेगा।

प्रश्नकर्ता : जो गोरी चमडीवाला होता है, उसके पुद्गल में क्या मोह अधिक भरा होता है?

दादाश्री : हाँ, तभी गोरी चमड़ी होती है। ऐसा है न, गोरी चमड़ी को सुंदर चमड़ी नहीं कही जाती। हमारे हिन्दुस्तान के लिए गेहुँआ चमड़ी को उत्तम माना गया है, मेरा और आपका रंग गेहुँआ कहलाये, उसे 'बेस्ट' रंग कहा गया है और वही सब से आखरी रंग है। गोरी चमड़ीवाले तो गोरे भभुके होते हैं, वे अधिक मोही होते हैं, इसलिये वे अधिक भुगते जाते हैं। ऐसे ये सारे कुदरत के नियम हैं। अब, हमें तो यह 'ज्ञान' हाजिर रहना चाहिए।

जो भी आकर्षणवाला माल होता है, आकर्षक माल होता है वह सारा बिक जाता है। लड़के-लड़कियाँ सभी बिक जाते हैं। (बाहर से आकर्षित रूप होने के कारण लोग उसे मन से भुगत लेते हैं।)

प्रश्नकर्ता : ऐसा आकर्षणवाला माल किस आधार पर होता है?

दादाश्री : मोह अधिक होने के कारण वह आकर्षक माल होता है। वह मूर्च्छित कहलाये। मोह कम होने के बाद बदन सारा सुडौल होता है पर चमड़ी आकर्षक नहीं होती। सुडौल होने पर वे रूपवान कहलायें। आकर्षक चमड़ी का होना रूप नहीं कहलाता। वह तो एक प्रकार का बाज़ारू माल कहलाये। जिसकी ख़रीद-फरोख़्त होती ही रहे। इन सभी को आम लाने भेजें तो कैसे आम लायें? ऊपर से सुंदर दिखनेवाले आम ले आयें। फिर अंदर से वे खट्टे निकलें या मीठे, यह तो फिर भगवान ही जानें!

प्रभावशाली हो तो रूप

प्रभावशाली को देखते ही उसके प्रभाव के कारण हमारा भाव परिवर्तित हो जाये, जब कि प्रभावहीन को देखते ही ऐसे भाव होते हैं जो अधोगति में ले जायें, जिसे देखते ही अधोगति होती है वह माल कैसा होगा? इसलिये लोग अक्सर कहा करते हैं कि भैया, प्रभावशाली से भेंट करना ताकि हमारा भाव आगे बढ़े, प्रभाव करे। और उसको (प्रभावहीन को) देखने के साथ ही जो ज्ञान है वह भी नदारद हो जाये।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हमारा यह जो भरा हुआ माल है, वह इसी अवतार में बदल जायेगा न?

दादाश्री : हाँ, वह तो सब परिवर्तित होता जाये, हमने परिवर्तित करना चाहा इसलिये सब परिवर्तित ही हो जाये। यह तो सारा पुराना घाटा, अब वह धंधा ही बंद कर दिया है।

तीर्थंकर भगवान महावीर की चमड़ी आकर्षक नहीं थी, भगवान सुडौल होते हैं। उनमें मोह की प्रकृति ही नहीं होती। मोह प्रकृति, वही आकर्षक चमड़ी है। मोह प्रकृतिवालों की आँखें भी विकारी होती हैं, ऐसे रूप को फिर आज के लोग क्या मानें कि, 'मैं कैसा रूपवान हूँ?' अरे! ऐसा उलटे देखते ही जो भाव होवे, वे अधोगति में ले जाये और ज्ञान हो वह भी नदारद हो जाये। पुरुष स्त्रियों को देखते हैं तो देखते ही ज्ञान चला जाता है और ये स्त्रियाँ पुरुषों को देखतीं हैं तो देखते ही ज्ञान चला जाता है। मतलब इस माल को देखना ही नहीं। जिससे प्रभाव उत्पन्न हो, हमारे भाव परिवर्तित हों, विचार परिवर्तित हों, ऐसा माल देखिये। यह तो सारा कचरा माल, 'रबिश', बिकाऊ माल!

संसार में ऐसा कोई कहता ही नहीं न? ऐसी बात ही खुली करके बताई नहीं होती न? जगत यह बात जानता ही नहीं है। लोग ऐसा समझते हैं कि, कैसा देहकर्मी है? ऐसे देहकर्मी को क्या करना है ? क्योंकि उन्हें देखकर लोगों की अधोगति हो जाती है। मनुष्य तो कैसा होना चाहिए? प्रभावशाली होना चाहिए कि जिसे देखते ही हमारे मन में सुंदर विचार पैदा हो और संसार विस्मृत हो जाये। इसलिये तो हमारे लोग प्रभावशाली के गुणगान करते हैं। अब चमड़ी की क़ीमत तेरी समझ में आ गई न?

प्रश्नकर्ता : 'झीरो वेल्युएशन' (कोई क़ीमत नहीं)।

दादाश्री : यह देह तो रेशमी चद्दर (चमड़ी) में बंधा माल है। उसमें माँस, लहू, पीब सारी गंदगी बंधी है। गटर आदि सब उसमें है और यह तो बेभान अवस्था में बिना भान के चल रहे हैं। यही ऐसा माल चद्दर में बाँधे बगैर खुला देने पर लोगों को कितनी खुशी होगी?

प्रश्नकर्ता : कोई छूए तक नहीं।

दादाश्री : अरे! देखे तक नहीं। यों देखते ही थू कर दें। अभी, इस समय तेरे पेट में क्या है? यह तो उस पर हाथ भी फिराते रहें और ऊपर से विषय की आराधना किया करें।

निश्चय के साथ सिन्सियारीटी चाहिए

अभी तो उम्र छोटी है न, इसलिये मोहनीय परिणाम अभी आये नहीं हैं। कर्म के उदय छोटी उम्र में आये नहीं होते। इसलिये अभी से हमने प्रबंध किया हो तो आगे कोई मुश्किल नहीं आये। यह ज्ञान, यह निश्चय सब हम ऐसे संजोकर रखें कि आनेवाले मोहनीय परिणाम हमें डिगाये नहीं। इस काल की बड़ी विचित्रता है कि इस काल के लोग सारे महा मोहनीयवाले हैं। इसलिये उनको पूछना 'कैसे हैं?' मगर उनसे नज़र मत मिलाना, नज़र मिलाकर बातचीत भी मत करना। काल की विचित्रता को लेकर बता रहे हैं, क्योंकि यह एक विषयरस ही ऐसा है कि सर्वस्व गँवा दे ऐसा है। अब्रह्मचर्य अकेला ही महा मुश्किलवाला है। अन्यथा बड़े सबेरे ही ऐसा तय कर लेना कि, 'इस संसार की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए', फिर उसे सिन्सियर (संनिष्ठ) रहना। हमारे भीतर तो बहुत से लबाड़ हैं, जो सिन्सियर रहने नहीं दे, पर यदि हम सिन्सियर रहें तो हमें कोई चीज़ बाधक नहीं है।

'जितना तू सिन्सियर उतनी तेरी जागृति।' यह सूत्र के रूप में हम तुझे देते हैं और छोटा बच्चा भी समझे ऐसा स्पष्ट रूप से देते हैं। मगर जो जितना सिन्सियर उतनी उसकी जागृति। यह तो साइन्स है। जितनी इसमें सिन्सियारीटी (संनिष्ठा) उतना ही खुद का हो पाये और यही सिन्सियारीटी तो अंततः मोक्ष

तक ले जाये। सिन्सियारीटी का फल मोरालिटी (नैतिकता) में आ जाये। जो थोड़ा-बहुत सिन्सियर रहा और सिन्सेरीटी के पथ पर चला, उस मार्ग पर आगे बढ़ा तो मोरल हो गया समझिये। पूर्णरूप से मोरल होने पर परमात्मा प्राप्त होने की तैयारी हो गई, यानी पहले सिन्सियारीटी चाहिए। मोरालिटी तो बाद में आयेगी।

एक बार तू सिन्सियर हो जा। जितनी वस्तु को सिन्सियर, उतनी उस वस्तु को तू जीत गया और जितनी वस्तु के प्रति तू अन्सिन्सियर उतनी वस्तु तू नहीं जीता। यानी सब के प्रति सिन्सियर होने पर जीत निश्चित है। यह जगत् को जीतना है। जगत् जीतोगे तो मोक्ष में जा पाओगे। बिना जगत् जीते कोई मोक्ष में जाने नहीं देगा।

सिन्सियारीटी और मोरालिटी की व्याख्या

सारे जगत का 'बेझमेन्ट' (मूलाधार), 'सिन्सियारीटी' (संनिष्ठा) और 'मोरालिटी' (नैतिकता) दो ही हैं! उन दोनों के सड़ जाने पर सब नीचे आ गिरे। इस काल में 'सिन्सियारीटी' और 'मोरालिटी' का होना तो सबसे बड़ा धन कहलाये। हिन्दुस्तान में यह धन ढेरों की मात्रा में था पर इन लोगों ने वह सारा धन 'फॉरिन' में 'एक्सपोर्ट' कर दिया और बदले में 'फॉरिन' से क्या 'इम्पोर्ट' किया यह मालूम है आपको? ये 'एटिकेट' की बला आ लिपटी है और उसकी वजह से इन बेचारों को कहीं चैन नहीं रहा है। हमें उस 'एटिकेट' की क्या ज़रूरत है? जिन में नूर नहीं है, उन लोगों के लिये है वह। हम तो तीर्थंकरी नूरवाले लोग हैं, ऋषि-मुनिओं की संतान हैं, हम। फटे वस्त्र पहने होगे तो भी तेरा नूर तुझे बता देगा कि, 'तू कौन है?'

प्रश्नकर्ता : 'सिन्सियारीटी' और 'मोरालिटी' का 'एक्झेक्ट' अर्थ समझाइये।

दादाश्री : 'मोरालिटी' माने क्या? खुद के हक का जो बनता हो और सहज रूप से जो आ मिले वह सब भुगतने की छूट। 'मोरालिटी' का यह अंतिम अर्थ है। 'मोरालिटी' तो बहुत गूढ है, उस पर तो बड़े-बड़े शास्त्र लिखे जा सकते हैं पर यह अंतिम अर्थ पर से आप समझ जायें।

और 'सिन्सियारीटी' माने जो मनुष्य परायों को 'सिन्सियर' नहीं रहता वह अपने आपको 'सिन्सियर' नहीं रहता। किसी के प्रति ज़रा सा भी 'इनसिन्सियर' नहीं होना चाहिए, इससे खुद की 'सिन्सियारीटी' का घात होता है।

दृष्टि गड़ाएँ तो दृष्टि बिगडे न ?

दिल तो कहीं न कहीं लगा ही रहता है, या तो इधर (सत्संग में) लगा रहे या तो उधर (कुसंग में) लगा रहेगा। यहाँ से छूटने पर वहाँ लग जायेगा, इसके लिये हमें प्रतिक्षा नहीं करनी पड़ती। इसलिये बहुत ही संभालने जैसा है। हम यहाँ से छोड़े तभी तो वहाँ लग जाये न? वहाँ चिपकने को करे उससे पहले सावधान हो जाना। दृष्टि तो गड़ाना ही नहीं, नीचा देखकर ही चला करना।

यह दुषमकाल है इसलिये चेतिये, दुषमकाल में दृष्टि संभालना। अब भी चेतिये। दृष्टि तो नितांत शुद्ध रहनी चाहिए। यह प्रतिक्रमण तो पलभर के लिये भी मत चूकना। खाने-पीने में उलटा-सीधा हो गया तो चला लेंगे पर दृष्टि तो गड़ाना ही नहीं। संसार का सब से बडा रोग ही यही है। इसको लेकर ही संसार खड़ा रहा है। विषय की जड़ों पर संसार खड़ा रहा है, विषय ही ज़ड है संसार की।

विषय हरएक को नहीं सुहाता, पर यह आगे का हिसाब हो गया है, आँख गड़ाई कि हो गया हिसाब शुरू, फिर नहीं छोड़ता वह हिसाब। ये सभी स्त्रियाँ हम सभी को आकृष्ट नहीं करतीं, जो आकृष्ट करतीं है वह हमारा पिछला हिसाब है। यानी उसे उखाड़ फेंकिये, साफ कर दीजिये। हमारे ज्ञान के बाद कोई चीज़ बाधक नहीं होती, केवल एक विषय के लिये हम आपको सावधान करते हैं। दृष्टि गड़ाना ही गुनाह

है। और यह समझने के बाद जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है, इसलिये किसी के साथ नज़र ही नहीं मिलाना, नज़र मिलाने से ही सब बिगड़ता है। दृष्टि का बिगड़ना भी एकदम से नहीं होता, पहले का हिसाब रहा तभी आकर्षण होता है। मूल दृष्टि नहीं बिगड़ती, बिगड़ी दृष्टि ही बिगड़ती है।

देखना, शुद्धात्मा स्वरूप

स्त्री संबंध में तो आँख पहले बिगड़ती है। आँख बिगड़ने के बाद बात आगे बढ़ती है। जिसकी आँख नहीं बिगड़ती उसे कुछ नहीं होता। अब यदि आप सेफसाइड करना चाहें तो आँख बिगडने नहीं देना और आँख बिगड़ जाये तो प्रतिक्रमण करना।

प्रश्नकर्ता : उस विषयविकारी दृष्टि के परिणाम कैसे होते है ?

दादाश्री : अधोगति। यह तो सारा दिन 'चाय' याद आती रहे। 'चाय' देखते ही दृष्टि बिगडती हो तो क्या वह बिना 'चाय' पीये रह सकता है फिर? दृष्टि नहीं बिगड़ना, सबसे बड़ा गुण कहलाये।

भगवान ने कहा था कि संसार में सभी चीजें खाना मगर मनुष्य जाति की आँख को मत देखना और उसका मुँह टकटकी लगाकर मत देखना। देखना चाहो तो सामान्य भाव से देखना, विषय भाव से मत देखना। आम को देखें और देखने बाद बाजू पर रख दें तो यों ही पड़े रहेंगे, उनका एक ही पहलू है, पर ये जीवित व्यक्ति तो आ लिपटेंगे। फिर उन्हें बाजू पर करेंगे तो वे दावा दायर करेंगे। शादी के मंडप में दरवाजे पर खड़े हों और लोग आते-जाते हों, उनकी ओर टकटकी लगाते हैं? नहीं? वहाँ तो एक आये और एक जाये, उनको सामान्य भाव से देखा करते हैं, वैसे सामान्य भाव से देखना। हमने ज्ञान होने से पहले निश्चित ही कर दिया था कि सामान्य भाव से देखना।

यदि ये सारे लोग नहीं होते तो कितना अच्छा होता? हमारे भाव ही नहीं बिगड़ते।

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो हमारे भीतर ही ऐसे भाव हैं इसलिये ऐसे निमित्त आ मिलते हैं न? यानी हमें अपने भाव ही मिटा देने चाहिए ताकि निमित्त नहीं आ लिपटे।

दादाश्री : सही बताया। इसलिये ही हम कहा करते हैं कि, भावनिद्रा टालें। सभी प्रकार के भाव हों ऐसे ये लोग हैं, उसमें भावनिद्रा नहीं आनी चाहिए, देहनिद्रा आयेगी तो चलेगा।

प्रश्नकर्ता : मगर भावनिद्रा ही आती है न?

दादाश्री : ऐसा कैसे चलेगा? यदि सामने से ट्रेन आ रही हो तब भावनिद्रा क्यों नहीं आती? ट्रेन तो एक अवतार का मरण ला सकती है पर इसमें तो अनंत अवतारों की मृत्यु का जोखिम है। चित्र-विचित्र भाव उत्पन्न हो ऐसा संसार है, उसमें आप अपने आपमें ही समझ लेना है कि भावनिद्रा आती है या नहीं? यदि भावनिद्रा आती है तो संसार आपको आ लिपटेगा। अब भावनिद्रा आने पर उसी व्यक्ति के शुद्धात्मा के पास ब्रह्मचर्य की शक्ति माँगना कि, 'हे शुद्धात्मा भगवान, मुझे सारे संसार के साथ ब्रह्मचर्य पालन की शक्ति दीजिये।' हमारे पास शक्ति माँगे तो उत्तम ही है पर वहाँ डिरेक्ट, जिस व्यक्ति के साथ व्यवहार हुआ, उससे माँग ले तो वह सब से बेहतर है।

प्रश्नकर्ता : नहीं देखना चाहें फिर भी सुंदर स्त्री की ओर दृष्टि घुम जाये तो क्या करना?

दादाश्री : उस वक्त आँखे मत मिलना।

प्रश्नकर्ता : आँख लड़ जाये तो क्या करना?

दादाश्री : हमारे पास प्रतिक्रमण रूपी साधन है, उससे धो डालना। आँख लड़ जाये तब तो उसी क्षण तुरंत प्रतिक्रमण कर डालना। इसलिये तो कहा है न कि चित्रांकित की गई स्त्री की फोटो या मूर्ति मत रखना।

प्रतिक्रमण से दृष्टिदोष धुल जायेंगे

आज तो सारा बाज़ार ऑपन होता चला है न?

यानी शाम होते ऐसा दिखाई दे कि कोई सौदा नहीं हुआ है फिर भी बारह सौदे कर डाले होते हैं। यों देखते ही सौदा हो जाये इस तरह सौदे तो होने हो तब होंगे, पर इसमें तो देखते ही सौदे हो जायें। हमारा ज्ञान रहा तो ऐसा नहीं होता। स्त्री जा रही हो तो उसमें आपको शुद्धात्मा दिखाई दे पर औरों (अज्ञानियों) को शुद्धात्मा कैसे दिखाई दे? देखने पर अब आप से सौदा हो जाता है क्या? नहीं होता न? और ज्ञान से पहले शाम होते होते कितने हो जाते थे?

प्रश्नकर्ता : दस-पंद्रह हो जाते होंगे।

दादाश्री : और यदि किसी की शादी में जाना हुआ तब? किसी के यहाँ शादी में गये हो, उस दिन वहाँ बहुत कुछ देख लेते है न? सौ के करीब हो जाये न? यानी यह सब ऐसा ही है। उसमें आपका दोष नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को ऐसा हो ही जाये, क्योंकि आकर्षणवाला दिखने पर दृष्टि अनायास आकृष्ट हो ही जाती है। इसमें स्त्रियाँ और पुरुषों, दोनों को आकर्षणवाला देखने पर सौदा हो ही जाता है। जैसे हम सब्जीमंडी से कोई आकर्षक सब्जी दिखाई पडी तो शाम को लौटते समय ले आते है न? नहीं लेनी हो तो भी ले लेंगे न? कहेंगे, 'सब्जी अच्छी दिखाई पडी तो ले आया।' लोग सुंदर आम नहीं लाते? सुंदर आम नज़र आये तो देखते ही सौदा कर डालते हैं न? अच्छे दिखाई देने पर आम खरीद लेते हैं न? फिर खट्टे निकलने पर कहेंगे कि पैसे गँवा दिये। ऐसा है संसार! ये सभी आँखों के चमकारे हैं। आँख देखती है और चित्त आकृष्ट होता है, इसमें आँखों का क्या कसूर? कसूर किसका?

प्रश्नकर्ता : मन का?

दादाश्री : मन का भी क्या कसूर? कसूर हमारा कि हम कच्चे पड़ गये, तभी तो मन सवार हो गया न? कसूर हमारा ही। पहले तो ऐसा भी विचार आता था कि यह तो हमारी बहन है, यहाँ हम नज़र नहीं कर सकते। यह तो मामु की लड़की होती हैं। आज तो कुछ भी देखने में कसर नहीं छोड़ते न? यह तो सारी पाशवता कहलाये। थोड़ा-बहुत विवेक जैसा तो होना चाहिए न?

दृष्टि तनिक भी विच्छेद नहीं होनी चाहिए। किसी के प्रति दृष्टि आकृष्ट होने पर सारा दिन प्रतिक्रमण करना पडे। मतलब, कितना बड़ा बीज बोया था कि हमारी दृष्टि आकृष्ट होती रहती है।

आकर्षण के कारणों का पृथक्करण

चोरी करना अच्छा लगता है? झूठ बोलना, मरना पसंद आता है? फिर परिग्रह क्यों पसंद है? विषय में ऐसा क्या है कि पसंद आता है?

प्रश्नकर्ता : बिलकुल पसंद ही नहीं है, फिर भी आकर्षण हो जाता है, इसके लिये बड़ा खेद रहा करता है।

दादाश्री : ऐसा खेद रहने पर विषय नष्ट होगा। एक आत्मा ही चाहिए फिर विषय क्यों होगा? और कुछ चाहिए तो विषय होगा न? विषय का पृथक्करण करना आता है क्या?

प्रश्नकर्ता : आप बताइये।

दादाश्री : पृथक्करण माने क्या? आँख को विषय भाता है? कान को सुनना सुहाता है? जीभ से चाटने पर मीठा लगता है? एक भी इन्द्रिय पसंद नहीं करती। यह नाक को तो बड़ा मज़ा आता होगा न? बहुत सुगन्ध आती होगी, नहीं? इत्र लगा होता है न वहाँ? मतलब ऐसा पृथक्करण करने पर पता चले। सारा नर्क ही भरा पड़ा है वहाँ। मगर ऐसा पृथक्करण नहीं करने से लोग उलझे हुए हैं, वहीं मोह होता है, यह भी अजूबा है न!

प्रश्नकर्ता : वह आकर्षण किसका रहता है?

दादाश्री : नासमझी का। नासमझी का तार जोइन्ट रह गया हो तो उसका आकर्षण रहा करे। मगर अब तो समझ में आ गया कि यह ऐसा है। पहले तो हमें सच्चाई मालूम नहीं थी न, और ऐसा पृथक्करण भी नहीं किया था न? लोगों ने माना वैसे हमने भी

सच मान लिया कि यही सही रास्ता है, पर अब सच्चाई का पता चल गया और समझ में आ गया कि इसमें तो पोलवाला खाता है। अहहह! इसमें तो इतने सारे जोखिम है कि इसी वजह से तो यह संसार खड़ा रहा है। और सारा दिन मार भी इसकी वजह से ही पड़ती है। उसमें भी इन्द्रियों को पसंद हो तो ठीक था मगर यह विषय तो एक भी इन्द्रिय को पसंद नहीं है।

प्रश्नकर्ता : चित्त अभी भी आकृष्ट हुआ करता है, दृष्टि बिगड़ जाती है।

दादाश्री : हमारी बहन रही तो वहाँ कैसे देखा करते हैं?

प्रश्नकर्ता : वहाँ तो कुछ नहीं होता है।

दादाश्री : क्यों, वह भी तो स्त्री ही है न? वहाँ विकार क्यों नहीं होता? उसके लिये विचार क्यों नहीं बिगड़ते? बहन क्या स्त्री नहीं है?

प्रश्नकर्ता : परमाणु का असर होगा इसलिये?

दादाश्री : हमने जहाँ पर भाव किया होता है, वहाँ पर ही हमारी दृष्टि बिगड़ती है। बहन के ऊपर कभी भाव नहीं किया होता है। इसलिये दृष्टि नहीं बिगड़ती, पर कुछ लोगों को बहन के ऊपर भी भाव किया हो तो वहाँ पर भी दृष्टि बिगडेगी।

प्रश्नकर्ता : इसके बावजूद ऐसे व्यवहार में स्त्री संयोग तो आ मिलते हैं, तब ऐसे ही दृष्टि पड जाती है।

दादाश्री : दृष्टि पड जाना स्वाभाविक है। उसमें पूर्व का दोष है। पर अब हम क्या करें ? दृष्टि पडना, उस पर हमारा काबू नहीं है। हम चाहें कितना भी पकड़ के रखें फिर भी आँख का स्वभाव है, देख लेने का। वह बिना देखे रहेगी ही नहीं, हिसाब है, इसलिये देखे बगैर नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : ऐसा दिन में दो-चार बार हो जाता है। दो-चार बार तो ऐसा लगे कि यह कुछ बराबर नहीं रहता।

दादाश्री : वह (देखनेवाला) और हम, दोनों जुदा ही है न? और वह तो बदलनेवाला नहीं, अटल को हम बदलना चाहें, तो क्या होगा? मगर प्रतिक्रमण से उसमें दिन-ब-दिन परिवर्तन होता जाये।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, उस ओर वैसे स्थिरता बढ़ती है।

मिठास की वजह बेहोशी

दादाश्री : अब कहीं मीठा लगता है क्या?

प्रश्नकर्ता : मीठा तो लग जाता है, पर उसमें जोखिमदारी है ऐसा समझ में आता है।

दादाश्री : जोखिमदारी भले ही लगती हो पर जब तलक मीठा लगता है न, तब तक वह मिठास कभी जोखिमदारी भूला देगी। यह मीठा किस हिसाब से लगता है, यही मेरी समझ में नहीं आता। इसमें कौन-सा हिस्सा मीठा है?

प्रश्नकर्ता : वह भ्राँति से मीठा लगता है क्या?

दादाश्री : भ्राँति से मीठा लगता हो तब भी अच्छा है मान लें, मगर यह तो भ्राँति से भी नहीं है। इसे कौन मीठा कहे?

यहाँ मुंबई में पानी की इतनी कमी हो जाये कि नहाने को भी नहीं मिले, इस हालात में इन लोगों की क्या दशा होगी? घर में एक रूम में सब साथ में बैठ भी न पाये ऐसी बदबू आने लगे। यह तो रोज नहाते हैं फिर भी बदबू मारते हैं न? और यदि नहीं नहाते तो सिर फट जाये ऐसी बदबू आने लगे। सब नहाते हैं फिर भी दोपहर दो बजे कपड़ा पानी में घिसकर निचोड़ा जाये तो पानी खारा हो जाये। फिर भी इस देह को क़ीमती क्यों मानी है? क्योंकि भीतर भगवान प्रकट हुए हैं, व्यक्त हुए हैं, इसलिये अन्य प्राणीयों के देहों में मनुष्य देह को क़ीमती मानी गई है। तब लोग उसे अन्य रूप में क़ीमती मानने लगे।

प्रश्नकर्ता : विषय में सबसे अधिक मिठास मानी गई है, वह किस आधार पर मानी गई है?

दादाश्री : वह जो विषय में मिठास उसे लगती है उसकी वजह उसने और कहीं मिठास देखी नहीं है। इसलिये उसे विषय में मिठास ज्यादा लगती है। मगर देखा जाये तो सबसे ज्यादा गंदगी वहीं पर ही है। पर मिठास के कारण बेहोशी छा जाती है, इसलिये उसे मालूम ही नहीं पड़ता कि यह विषय की गंदगी समझ में आ जाये तो सारी मिठास नदारद हो जाये।

विषय के आकर्षण की गुदगुदी के कारण ही जगत फँसा हुआ है। गुदगुदी होते ही तुरंत ज्ञान हाजिर कर देना ताकि ज्ञान से सब अलग-अलग दिखाई दे और ज्ञान के द्वारा विषय से छूट पायें।

'श्री विझन' प्रयोग से बने निर्विकारी

मैं ने जो प्रयोग किया था उसी प्रयोग का ही इस्तेमाल करना। हमें यह प्रयोग निरंतर लगा ही रहता है, इसलिये ज्ञान होने से पहले भी हमें जागृति रहती थी। सुंदर कपड़े पहने हों, दो हजार की साड़ी पहनी हो, फिर भी देखने के साथ ही जागृति आ जाये ताकि 'नेकेड' (नग्न) दिखाई दे, फिर दूसरी जागृति उत्पन्न हो जाये ताकि बिना चमड़ी का नज़र आये और तीसरी जागृति में फिर पेट काटने पर अंदर की अँतडियाँ दिखाई दे, अंतडियों में होनेवाली प्रक्रिया सब नज़र आये। लहू की नसें दिखाई दे, संडास दिखाई दे। ऐसे सारी गंदगी दिखाई पड़े। फिर विषय पैदा ही नहीं होता। इनमें आत्मा शुद्ध वस्तु है, वहाँ जाकर हमारी दृष्टि रुके, फिर मोह क्यों होगा? लोगों को ऐसा आरपार दिखाई नहीं देता। लोगों के पास ऐसी दृष्टि कहाँ? ऐसी जागृति वे कहाँ से लायें? ऐसा 'श्री विझन' दिखाई देना वह तो सबसे बड़ी जागृति कहलाये। एट-ए-टाइम ये तीनों जागृतियाँ होती है। यह जो जागृति मुझे रहती थी, वह मैं आपको बताता हूँ। जैसे मैं जीता हूँ, वही रीत आप सभी को दिखाकर विषय को जीतने की राह दिखाई है। राह तो होनी चाहिए न? और ऐसा बिना जागृति के कभी संभव ही नहीं है न?

यह तो काल ही बड़ा विचित्र है, पहले कहाँ लिपस्टिक और चेहरे पर पाउडर आदि लगाया करते थे? जब कि आज तो ऐसा सब खड़ा किया है कि मनुष्य को आकर्षित करे, ऐसा सारा मोह बाज़ार खड़ा हो गया है। पहले तो शरीर चंगा हो, सुंदर हो तब भी मोह के ऐसे साधन नहीं थे। आज तो निरा मोह बाज़ार ही है। इसलिये बदसूरत लोग भी खूबसूरत दिखाई देते हैं, पर इसमें क्या देखना? यह तो निरी गंदगी ही है।

इस प्रयोग से मुझे तो बहुत जागृति रहती थी, जबरदस्त जागृति रहती थी। हमारा ज्ञान जागृतिवाला है, एट-ए-टाइम लाइट करना (जागृति रखना) चाहें तो हो सके ऐसा है। अब ऐसी घड़ी आने पर जागृति का उपयोग नहीं करे तो मनुष्य मारा जाये। हम लाख बार शुद्धात्मा देखना चाहें फिर भी दृष्टि स्थिर ही नहीं होने दे, इसलिये ऐसा (श्री विझन का) उपयोग चाहिए। ज्ञान होने से पहले हमें ऐसा उपयोग लगा रहता था, वर्ना इस काल में यह मोहबाज़ार तो खतम कर डाले। आज तो स्त्रियों को देखते ही रोग लग जाये। अब क्या लोग शादीशुदा नहीं होते? शादीशुदा होने पर भी वही हाल! क्योंकि यह समय ही ऐसा आया है। यह 'श्री विझन' याद रहेगा कि भूल जायेंगे?

प्रश्नकर्ता : निश्चय दृढ होने के बावजूद भी किसी स्त्री की ओर बारबार दृष्टि आकृष्ट होती है और 'श्री विझन' की जानकारी होते हुए भी 'जैसा है वैसा' क्यों दिखाई नहीं देता?

दादाश्री : यानी 'श्री विझन' जाना नहीं है। 'श्री विझन' जानने पर फिर दृष्टि आकृष्ट होती ही नहीं। 'श्री विझन' दिखाई देने पर हाथ ही नहीं डालते। मगर यह तो दृष्टि पडने पर उलटे देख लेते है।

प्रश्नकर्ता : 'श्री विझन' दिखता नहीं, वह मोह को लेकर क्या?

दादाश्री : जानता ही नहीं, 'श्री विझन' क्या है यही मालूम नहीं है। मोह के कारण होश ही नहीं रहता और मोह माने बेहोशी।

प्रश्नकर्ता : अब 'श्री विझन' दिखाई दे उसका उपाय क्या है?

दादाश्री : ऐसा कुछ दिखनेवाला ही नहीं है, फिर उसका उपाय करने को कहाँ रहा? ऐसा जिसे दिखाई दे, वह मनुष्य अलग तरह के होते हैं, अफलातून (उच्च कोटि के) मनुष्य होते हैं।

इस काल में मनुष्य को इतना वैराग्य रहता नहीं है न? यानी यह 'श्री विझन' बहुत ऊँची वस्तु है, उससे वैराग्य रहे फिर। हमने छोटी उम्र में ही ऐसा प्रयोग किया था। खोजबीन की थी कि यही विषय का तो सबसे बडा रोग है। फिर जागृति का प्रयोग किया था, बाद में हमें सहज हो गया। हमें बिना कुछ किये सब साहजिक रूप से दिखाई दे। गटर का ढक्कन दो-चार बार खोलना हुआ हो, फिर मालूम नहीं हो जाये कि भीतर क्या है? फिर ऐसा दूसरा गटर आया तो पता नहीं चल जायेगा? संभव है दो-चार बार गलती हो जाये, मगर बाद में तो हमें खबर रहेगी न?

प्रश्नकर्ता : यानी यह 'श्री विझन' का प्रयोग निरंतर रहना चाहिए क्या?

दादाश्री : वास्तव में ऐसा ही है, ऐसा समझ लीजिये। यह तो कपड़े ढंककर फिरते हैं इसलिये सुंदर दिखाई दे, मगर भीतर ऐसा ही है। यह तो माँस रेशमी चद्दर में बंधा है, इसलिये मोह होता है। अकेला माँस रहता तो हर्ज नहीं पर यदि अँतडियाँ आदि सब काटें तो अंदर से क्या निकले? इस पर विचार ही नहीं किया है। यदि विचार किया होता तो दृष्टि फिर उस ओर जाती ही नहीं। यह तो मनुष्य ने भ्राँति में मूर्खता से सुख की कल्पना की है। सब ने कल्पना की इसलिये इसने भी कल्पना चलाई और ऐसा ही चलता रहा। सत्तर-अस्सी साल की बुढिया के साथ कोई शादी करेगा क्या? क्यों नहीं करेगा?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई रास्ता नहीं है, शॉर्टक्ट नहीं है कि 'श्री विझन' से पहले ही आरपार स्पष्ट दिखाई दे?

दादाश्री : यही शॉटक्ट है। सबसे बड़ा शॉर्टकट ही यह है। 'श्री विझन' का अभ्यास करते-करते आगे जाने पर 'ज्यों का त्यों' दिखाई देने के बाद फिर विषय छूट जायेगा। 'श्री विझन' को छोड़कर दूसरा शॉर्टकट उलटी राह चलना है। नहीं तो शादी के लिये किसने मना की है? आराम से ब्याह लीजिये न? किसने बाँध रखा है आपको?

हमें सब आरपार दिखाई देता है। यह ज्ञान ऐसा है कि एक न एक दिन आपकी दृष्टि ऐसी करायेगा। क्योंकि ज्ञान देनेवाले की दृष्टि ऐसी है। मेरी दृष्टि ऐसी है यानी ज्ञान देनेवाले की जैसी दृष्टि है वैसी दृष्टि ज्ञान पानेवाले की हो जाती है। जिसे आरपार दिखता रहे, उसे मोह कैसे हो सकता है?

वैज्ञानिक शब्द वैराग्य जन्मायें

यह 'अक्रम विज्ञान' है। यह तो बहुत अजायब विज्ञान है। जगत जब जानेगा तो (आफ़रीन होकर) उछल-कूद मचा देगा।

आपको स्त्री के ऊपर वैराग्य आया कि नहीं आया? अभी पंद्रह मिनट में ही? देखा, ज्ञानियों की चाबियों से कैसा वैराग्य आता है? अगर पहरा दें तो उसका अंत कहा होगा? इधर से पहरा लगायें तो उधर से घुस जाये। हम किसी के भी ऊपर पहरा नहीं लगाते, हम कहाँ पहरा लगाने जायें? इस गंदगी में जो लोटना चाहता हो, उसे हम फिर छोड़ देते हैं।

यहाँ ये बच्चे ब्रह्मचर्य पालते हैं वह तो सहज स्वभाव से रहता है, पलभर के लिये भी चूके बिना, निरंतर रहता है।

कोंपलें तोड डालें, विषय बीज की

मन में विषय का विचार आते ही उसे उखाड़ फेंकना चाहिए। और ज़रा-सा आकर्षण होते ही तुरंत उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। ये दो शब्द जो पकड़ ले उसे ब्रह्मचर्य कायम रहेगा। हमें लगे कि यह विषयविकार का आकर्षण हुआ तो तुरंत प्रतिक्रमण करना चाहिए और यदि विषयविकार का कोई विचार भीतर पनपता हो तो उस पौधे को तुरंत ही उखाड़कर

बाहर फेंक देना! बस, यह दो करने पर फिर उसे कोई आपत्ति नहीं आनेवाली।

प्रश्नकर्ता : मगर जागृति और ये दोनों एक साथ रहेंगे क्या?

दादाश्री : नहीं, जागृति होने पर यह संभव है वर्ना ऐसा होना संभव ही नहीं है।

पौधा उग रहा हो वहीं से समझ लेना चाहिए कि यह पौधा कौंछ का है, इसलिये उसे उगने के साथ ही उखाडकर फेंक देना चाहिए, वर्ना बदन से लग गया तो उस कौंछ से सारे बदन में अगन उठेगी। इसलिये फिर से नहीं उगे उस प्रकार उखाडकर फेंक देना। उसी प्रकार इस मिश्र चेतन (जीवित व्यक्ति - पुरुष के लिये स्त्री और स्त्री के लिये पुरुष) के विचार आये तो उसे उगने नहीं देना, उसे तो उखाड ही डालना तभी एक दिन इसका हल निकलेगा, नहीं तो यदि एक भी उग गया तो कई अवतारों को बिगाड़ देगा। भगवान ने विषय के पौधे को ही उखाडने को कहा है। अन्य पौधे भले ही उगे, उसका जोखिम नहीं है पर मिश्र चेतन का जोखिम है। अनादि से इसका अभ्यास होने के कारण मन फिर उसीका ही चिंतन करे, तब विषय का पौधा फिर उगने लगे। जैसे मूँग को पानी देने पर अंकुरित होता है फिर जड़ें निकलती हैं, इस पर से हम अनुमान लगाते हैं कि अब पौधा उगेगा। वैसे ही इसमें, विषय का विचार आते ही उसे उखाड़ फेंकना। यह विषय अकेला ही ऐसा है कि ज़रा-सा भी पौधा बड़ा हो गया कि फिर पेड़ होते देर नहीं लगती, इसलिये उसे जड़ से ही उखाड़ देना।

जागृति से ही जीत पायें

अब यदि ऐसी जागृति रही तो मनुष्य पार उतर सकता है, वर्ना यह तो बेहोशी है। यह तो चद्दर में लिपटा माँस है। सारे संसार का कूडा-कर्कट इस शरीर में है, फिर भी (चमडी की) चद्दर को लेकर कैसा मोह होता है? वह मोह क्यों उत्पन्न होता है? अजागृति के कारण। फिर बाद में पछताना पड़ता है न? पछताना माने क्या? पश्चाताप। पश्चाताप माने भीतर खटकता रहे। उसके बजाय जागृति रही तो कितना अच्छा! यदि जागृति नहीं रहती हो तो फिर शादी कर लेना, हमें उसमें आपत्ति नहीं है। शादी माने फिर निपटारा कराना पडे। नहीं तो फिर जागृति रखनी पड़े। आज तक निरी अजागृति ही थी। यह तो उसमें से जागृति करना शेष रहा। एक सौ आठ दीप जलाने हों, उसमें से बारह दीप जलाये हों, फिर तेरहवाँ, चौदहवाँ ऐसा करते-करते जलाते जाना है।

प्रश्नकर्ता : जागृतिपूर्वक होश में रहने के बावजूद मान लीजिये कि खिंच गये, वहाँ हमारी एक नहीं चली, तब क्या करना? उसमें कितना दोष बनता है?

दादाश्री : दोष तो बनेगा ही न? वैध ने कहा हो कि मिर्च मत खाना और हम मिर्च खायें, तो क्या होगा? हालाँकि ऐसे मूर्ख कम होते हैं, फिर भी कोई ऐसा निकले कि मना करने पर भी मिर्च खाये, तो ऐसा करने से उसका रोग बढेगा।

प्रश्नकर्ता : पर अब वह करे क्या? उपाय तो होना चाहिए न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करे, और क्या?

प्रश्नकर्ता : पर ज्ञानी को बताना नहीं? जिसने आज्ञा दी हो, उसे कहना तो चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, कहना, फिर भी प्रतिक्रमण करना चाहिए। पर कोई मिर्च खाये (आज्ञा भंग करे) तो उसमें ज्ञानी थोड़े ज़हर खायें?

विषय के भयंकर रोग के प्रति सावधान रहिये

कभी भीतर बुरे विचार उगे और उसे निकालते देर हो गई तब ज़रा बड़ा प्रतिक्रमण करना पड़े। नहीं तो विचार उगते ही तुरंत निकाल देना, उखाड़कर तुरंत फेंक देना। बाकी यह विषयविकार ऐसा है कि एक सेकिन्ड भी, जरा-सा भी रहने देने जैसा नहीं है, वर्ना तिल से ताड़ होते देर नहीं लगती। मतलब उगते ही

तुरंत उखाड़ फेंकना। जैसे हमें गेहूँ बोने हों और तम्बाकू का पौधा निकल आया तो उसे तुरंत निकाल देते हैं, वैसे इसमें विषय-विचार को उखाड़ देना।

प्रश्नकर्ता : विषय अज्ञान वह क्या है?

दादाश्री : बगीचे में क्या बोया है यह उगने के बाद मालूम होता है कि यह धनिया है या मेथी है, इनको पत्तों पर से पता चल जाता है न? ऐसा विषय बीज का है, उसे तो उगते ही खिंच निकालना।

जो पडे हुए बीजों को उखाड़ देता है, और उन्हें उखाडने के बाद जो विषय शेष रहे वह विषय है ही नहीं। पेड़ है तो रहने दीजिये, बारीश होती है होने दीजिये। मान लीजिये कि यहाँ एक बेर का पेड़ है, अब उसका बीज तो फलाँग दूर भी उग सकता है, क्योंकि पवन उसे उड़ाकर कहीं भी ले जा सकता है। इसलिये बेरी के नीचे के ही नहीं पर इर्द-गिर्द भी उगे हुए सारे बीजों को उखाड़ फेंकना है। बीज किसे कहते है? अन्य संयोगों के आ मिलने से उग निकले। उसे उगते ही उखाड देना।

विषय के दो प्रकार हैं; एक चार्ज, दूसरा डिस्चार्ज। चार्ज के बीज को धो डालना। वास्तव में तो विचार आना ही नहीं चाहिए। ज्ञानी पुरुष को लक्ष्मी का, विषय का विचार ही नहीं आता, इसलिये बीज पडने कि या उगने कि बात ही कहाँ रही। आपको विचार आया तो उसे ऊखाड़ देना, फिर विचार नहीं उगनेवाला। एक-एक करके सारे उखाड़ देना। यह तो अक्रम विज्ञान है, इसलिये अज्ञान नहीं रहा पर पिछला माल शेष रहा है। इसलिये चेतावनी देनी पड़े। विषय-बीज का स्वभाव कैसा है कि पड़ते ही रहें। आँखें तो तरह-तरह का देखा करें, इसलिये भीतर बीज पड़ते रहें तो फिर उसे उखाड़ते रहना। हॉटेल देखने पर खाने की इच्छा होगी कि नहीं? उसके समान है। हमें तो मोक्ष में जाना है इसलिये चेतना पड़े। आँखो से देखने पर कोई भी आकर्षण हो तो वह भयंकर रोग है ऐसा मानिये। जहाँ तक बीज के रूप में है, वहाँ तक उपाय है, फिर कुछ नहीं हो सकता।

सांसारिक जंजालग्रस्तों के लिये चाबी

प्रश्नकर्ता : मुझे अपने व्यवसाय को लेकर बाहर सब जगह बहुत घुमना पड़ता है। (इसलिये विषय विचार बहुत परेशान करते है।)

दादाश्री : हाँ, पर ऐसे संयोगों में हमें सावधान रहना है ताकि वह हम पर सवार न हो जाये। वह मन न्युट्रल है और हम 'पुरुष' हैं। न्युट्रल (नपुंसक) कभी 'पुरुष' को जीत नहीं सकता।

माँसाहार की दुकान पर जाने पर भी उसके लिये विचार नहीं आता, ऐसा क्यों? क्योंकि वह माल ही नहीं भरा है भीतर में। इस पर से हम नहीं समझ जायें कि भीतर भरा हुआ माल ही उछल-कूद करता रहता है। नहीं भरा हो तो नहीं उछलनेवाला। यह बात समझ में आती है कि नहीं आती?

प्रश्नकर्ता : वह बराबर है पर बहुत विचार आने पर फिर ऐसा हो जाता है कि यह सब क्या है?

दादाश्री : बाहर लोग शोर मचाते हों और हम एक ओर दरवाजा बंद करके बैठ जायें, तो फिर है कोई झंझट? हम उसके साथ व्यवहार ही नहीं रखें तो हम रह पायें। यानी झंझावात आया तो पार निकल जायें और झंझावात उड़ जायेगा। बवंडर रोज़ थोड़े होता है? दो दिन ठहरे। सारा दिन चलता रहे तो भी उड़ा दें। ये सभी (ब्रह्मचारी) बताते हैं न, इनको क्या बवंडर नहीं उठते होंगे? इनको भी अनेकों बवंडर उठते हैं, पर क्या करें?

प्रश्नकर्ता : चंदुभाई (चंदूभाई की जगह वाचक अपने को स्वयं समझे) विषय भोगते हो ऐसे विचार आते हैं, ऐसा वैसा सब दिखाई देता है, अंदर सारी फोटो निकला करती है, भीतर फिर कुछ अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : अच्छा नहीं लगे तो हर्ज नहीं, अच्छा नहीं लगे तो भी चंदुभाई को ही न? तुझे तो नहीं न? तू तो अलग ही है न इसमें? दूसरी कोई भूल रही हो तो चल जाये पर विषय नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ऐसा विचार आता है कि हमें इन्टरेस्ट पड़ता है, मतलब वृत्ति चोर होगी तभी इन्टरेस्ट पड़ेगा न, वर्ना इन्टरेस्ट कैसे पड़ता?

दादाश्री : इन्टरेस्ट पड़े ऐसा माल हम लाये हैं। हमें पता चले, अहह! इन्टरेस्ट पड़े ऐसा है। इस पर (चंदुभाई से) कहें कि 'इन्टरेस्ट के मज़े लो। शादी करो, तुम्हें कौन मना करता है?'

आत्मा का इसमें इन्टरेस्ट होता ही नहीं है। वह इन्टरेस्ट आहारी को होता है। आहारी देखे हैं न? ठूस-ठूसकर खाते हैं और दु:खी हो जाते हैं। फिर अनशन करने को बैठते हैं, फिर वही के वही आहारी!

प्रश्नकर्ता : फिर मन में आता है कि यह निश्चय का कच्चापन है कि चोर वृत्ति है? ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : नहीं, वह तो (पिछला) भरा हुआ माल है और वक्त होने पर इर्द-गिर्द के संयोग ऐसे होने के कारण फूटता है।

प्रश्नकर्ता : पहले ऐसी स्थिति थी कि मैं इन ब्रह्मचारियों से अलग हुआ तो मेरा ब्रह्मचर्य छूट जाता था। समूह से ज़रा अलग हुआ या अकेला घर पर रहता तो सारे विचार घेर लेते थे।

दादाश्री : विचार घेर लें, उसमें हमारा क्या नुकसान? हम उसके देखनेवाले है न? होली में हाथ क्यों नहीं डालता? होली का दोष निकालना तो गलत होगा न? दोष तो हम हाथ डालें वह कहलाये।

विचार तो हर तरह के मंडराते रहे। मच्छर मंडराने लगे तो हम हाथ हिलाते रहें तो दूर हो जाते हैं न? हाथ हिलाना ज्यादा हुआ तो हमारे हाथ दु:खने लगेंगे, पर कुदरत के हाथ कहाँ दु:खनेवाले हैं? हम कहें कि मच्छरों को छूने नहीं देना है तो अंदर ऐसा भी हो जाये। निश्चय करने पर ब्रह्मचर्य का कैसा सुंदर पालन होता है!

ऐसा करते-करते छूट गये

हमने अनेकों अवतार से भाव किये थे, इसलिये हमें तो विषय के प्रति भारी चीढ़ रहती थी। परिणाम स्वरूप ऐसा करते-करते छूट गये। विषय हमें मूलत: पसंद नहीं पर करना क्या? कैसे छूटें? पर हमारी दृष्टि बहुत गहराईवाली, हम बहुत विचारशील, कैसे भी लुभावने कपड़ें क्यों नहीं पहने हो फिर भी सब आरपार दिखाई दे निरा। बिना कुछ किये दृष्टि से ही, चहूँ ओर का सब दिखाई दे। इसलिये राग ही नहीं होता। हमें और एक बात क्या हुई कि आत्मसुख प्राप्त हुआ। जलेबी खाने के बाद चाय पीने पर वह फिक्की लगे, वैसे ही आत्मा का सुख जिसे प्राप्त हो गया हो उसे विषय के सारे सुख फिक्के लगे। तुझे फिक्का नहीं लगता क्या? पहले जैसा मीठा लगता था, वैसा अब नहीं लगता न?

प्रश्नकर्ता : फिक्का अवश्य लगता है मगर बाद में फिर मोह खड़ा हो जाता है।

दादाश्री : मोह तो उत्पन्न होगा ही, ऐसा कर्मो के उदय के कारण होता है। कर्म बंधे हैं न, वे मोह उत्पन्न कराते हैं। मगर तुम्हें ऐसा लगता है सही कि, सच्चा सुख तो आत्मा में ही है?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, ऐसा बराबर लगता है। विषय में सुख नहीं, यह तो पक्का समझ में आ गया है।

दादाश्री : गैर औरत को देखने पर विचार तो नहीं आता न?

प्रश्नकर्ता : आता है कभी-कभी।

दादाश्री : ऐसा होता है मतलब अभी कच्चापन है।

प्रश्नकर्ता : केवल यूं ही साधारण मोह ही होता है, और कुछ नहीं।

दादाश्री : साधारण मोह भी फिर बहा ले जाये न? यह विषय को जीतना तो बड़ा मुश्किल है। हमारे

इस ज्ञान से जीता जा सकता है। यह ज्ञान सदा सुखदायी है, इसलिये जीता जाये।

चालू लिंक तोडने के उपाय करें

यदि आत्मज्ञान प्राप्त हो जाये तो समझ में आ जाये कि विषय में कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपके ज्ञान के बाद, हम इस एक अवतार में ही विषय बीज को निर्मूल करके, एकदम से निग्रंथ हो सकते हैं क्या?

दादाश्री : सब कुछ संभव है। अगले अवतार के लिये बीज नहीं पड़ते। ये पुराने बीजों को आप धो डालें तो नये बीज नहीं पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : मतलब अगले अवतार में विषय का एक विचार नहीं आयेगा?

दादाश्री : नहीं आयेगा। थोड़ा-बहुत कच्चा रह गया होगा तो पहले के थोड़े विचार आयेंगे पर उन विचारों का असर नहीं होनेवाला। जहाँ हिसाब नहीं उसका जोखिम नहीं। यह तो लिन्क चालू होता है उसका जोखिम आता है। मनुष्य को तो बिना वजह ही अपने नजदीकी रिश्तेदारों के बारे में भी विषय का विचार आ सकता है पर वहाँ लिन्क नहीं होने पर वह उड़ जाता है फिर।

विषय का यदि थोड़ा-सा ध्यान किया कि ज्ञान भ्रष्ट हो जाये। 'अतो भ्रष्ट, ततो भ्रष्ट' हो जाये। जलेबी का ध्यान लगाने पर ऐसा नहीं होता पर यह योनि विषयक ध्यान करने पर वैसा हो जाये।

रूचि को ज़ड से निकालिये

प्रश्नकर्ता : भीतर रूचि रही है, यह मालूम क्यों नहीं पड़ता?

दादाश्री : वह मालूम नहीं पड़े इतना मोटा आवरण है।

प्रश्नकर्ता : पर यूं तो ऐसा लगता है कि हमें विषय भोगना ही नहीं है, ऐसा क्यों?

दादाश्री : ऐसा लगता अवश्य है, पर वह सब शब्दों से है। अभी जो भीतर रूचि रही है वह गई नहीं है। रूचि का बीज अंदर होता है, जो धीरे-धीरे तेरी समझ में आयेगा। जो मनुष्य डेवलप हुआ होता है उसकी समझ में आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : क्षत्रिय को विषय के सामने क्षत्रियपन नहीं आता?

दादाश्री : आ जाये, पर विषय में क्षत्रियपन आये ऐसा नहीं है। क्षत्रियपन से बात बनती तो उसे (विषय को) काट डालने को कहते, पर यह विषय में तो समझदारी का काम है, इसलिये बहुत सोच-विचार के बाद विषय जाता है। इसलिये तो विषय से छूटने के लिये मैं ने तीन विझन दिखलाये हैं। (फिर उसे दृष्टि राग न हो उस लिये) वर्ना यदि स्त्री ने सुंदर वस्त्राभूषण धारण किये हों तो सब भूल जाये और मोह उत्पन्न हो जाये।

प्रश्नकर्ता : विषय के लिये अंदर रूचि होती है पर अभी पता नहीं चलता कि रूचि है या नहीं?

दादाश्री : इतना जाना यह भी तेरे लिये अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : विषयों में जो इन्टरेस्ट पैदा होता है वह रूचि के आधार पर पैदा होता है क्या?

दादाश्री : हाँ, रूचि नहीं होती तो कुछ नहीं होता। अरूचि के आधार पर विषय कैसे खड़ा होगा? किसी स्त्री का हाथ जल गया हो, पूरा का पूरा हाथ जल गया हो और फफोलों से भर गया हो, जिसमें से पीप निकलती हो, अब जो पुरुष प्रतिदिन सारा बदन सहलाया करता हो उसे वह स्त्री कहे कि, 'इसे जरा धो दीजिये न?' तो वह क्या कहेगा?

प्रश्नकर्ता : 'ना' बोलेगा।

दादाश्री : मतलब जहाँ रूचि थी वहाँ ऐसा देखने पर अरूचि हो जाये न? फिर वहाँ दोबारा रूचि उत्पन्न नहीं होनेवाली, पर वास्तव में स्टेबीलाइझ

(स्थिर) रहना चाहिए। यहाँ तो फिर स्वस्थ होते ही जैसा था वैसा हो जायें, ऐसा नहीं होना चाहिए। स्टेबीलाइझ हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : स्टेबीलाइझ कैसे होता है?

दादाश्री : वह तो बाहर आगे रोड पर जाकर पूछ लेना, वे करते हैं ऐसा तू भी करना। ये कंकड-मेटल आदि डालकर ऊपर रोलर घुमाते हैं और सब स्टेबीलाइझ हो जाता है, उसे देख लेना।

प्रश्नकर्ता : पर यहाँ कौन-सा रोलर घुमाना?

दादाश्री : प्रतिक्रमण का रोलर, बार-बार पछतावा करते-करते दोषों को निकाल बाहर करना।

ब्रह्मचर्य मानें व्यवहार चारित्र्य

चारित्र्य का स्ट्रोंग (मजबूत) हो गया मानों जगत् जीत लिया। जगत् जीतने के लिये चारित्र्य स्ट्रोंग हो इतना ही ज़रूरी है। पहनावा कैसा भी हो, उसमें कोई आपत्ति नहीं है। व्यवहार चारित्र्य और कपडों का कोई लेना-देना नहीं है। कपड़ों में तो एक मत ऐसा है कि एक भी कपड़ा नहीं पहनना चाहिए। कोई कहता है सफेद वस्त्र लपेटना चाहिए। पर आप कॉट-पतलून पहनें तो भी हर्ज नहीं है। वे सारे अभिप्राय व्यवहार के हैं। खाने की वस्तु कुछ भ्राँति की वस्तु नहीं है। बड़ा आदमी भी जलेबी मुँह में डाले तो मीठी ही लगेगी। नहीं लगती क्या? यानी अकेला चारित्र्य जीत लिया कि सारा जगत् जीत लिया। बाकी खाये-पीये उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। कम-ज्यादा खाने में किसी को क्या एतराज़? आप इत्र डालें तो लोगों को कोई एतराज़ होगा क्या? और बड़ी-बड़ी मूछें रखें, गलमुच्छे रखें तब भी जगत् को एतराज़ नहीं है। जगत् तो जहाँ एतराज़ है वहीं एतराज़ जतायेगा। जगत् को दूसरी सब जोखिमदारी चीजों के लिये एतराज़ ही नहीं है। और बिना हक का विषय रहा तो बड़ी जोखिमदारी है, भयंकर अधोगति में धकेल देता है!!! जगत् तो आईने जैसा है, वह हमें अपना रूप दिखाता है। जो-जो टोकनेवाले हैं वे हमारा आईना है।

वास्तव में तो विषय में सुख ही नहीं है। सुख जो माना है वह रोंग बिलिफ की भी रोंग बिलिफ है। जलेबी में सुख ज़रूर लगता है। यदि किसी को जलेबी नहीं भाती हो तो उसे श्रीखंड भाता है, मतलब ये वस्तुएँ सुखदायी लगती है। जब कि विषय तो दाद खुजलाने के समान है। जो कोई वस्तु नहीं है, फिर भी उसमें से सुख आता है न? यानी विषय तो रोंग बिलिफ की भी रोंग बिलिफ है। और फिर जगत में तो जो चल पड़ा वह चल पड़ा, सच्ची समझदारी ही नहीं है न?

चारित्र्य की नींव पर मोक्षमार्ग खड़ा है, इसलिये मैं इन सभी को ब्रह्मचर्य की समझदारी दे रहा हूँ। हमें खाना-पीना होगा, उसमें एतराज़ नहीं है। हाँ, शराब और माँसाहार से दूर रहें, और सभी चीजें पकौड़े-जलेबी खाना चाहें तो खाइये, उसका हल निकाल दूँगा। अब इतनी सारी छूट देने के बावजूद आप अच्छी तरह से आज्ञा में नहीं रह पायें तो क्या हो सकता है? कृपालुदेव (गुजरात में हो गये ज्ञानी पुरुष) तो यहाँ तक कहा करते थे कि तेरी पसंदीदा थाली औरों को खिला देना। पर हमने तो यहाँ क्या करने को कहा है कि, 'तुझे जिससे शांति मिले ऐसा तू करना। तू पसंदीदा थाली औरों को मत खिलाना, आराम से तू ही खाना।' हमें तो चारित्र्य की नींव मज़बूत रखनी है। मोक्ष में जाने के लिये यह एक ही मूल वस्तु है।

'फाइल' के प्रति चंचलता होने पर...

प्रश्नकर्ता : कभी कभी वह समझ नहीं रहती।

दादाश्री : हमारा फोर्स टूट जाये तो वह समझ चली जायेगी। यानी हमारा निश्चय टूटने पर समझ चली जायेगी। हमारे निश्चय को लेकर समझ रहती है। वर्ना पुद्गल में ऐसा कुछ नहीं है, पुद्गल को अच्छा-बुरा कुछ नहीं लगता। उसे तो 'बहुत अच्छी वस्तु है, अच्छी वस्तु है, अच्छी वस्तु है' कहा कि वह आगे धक्का देगा। 'खराब है, खराब है' कहने पर छोड़ देगा। जहाँ मन आकृष्ट होता हो, उस फाइल के आने

पर मन चंचल ही रहा करता है।

ऐसी फाइल आने पर, आपके मन को चंचल होते देखकर, हमें भीतर बहुत दु:ख होता है कि, इसका मन चंचल हुआ है। कभी ऐसा होने पर हमें आँख लाल करनी पड़े।

फाइल आते ही भीतर उछल-कूद शुरू हो जाये। ऊपर जाये, नीचे जाये, ऊपर जाये, नीचे जाये, मगर उसका विचार आते ही सोचना चाहिए कि उसके भीतर तो निरी गंदगी भरी पड़ी है, कूडा-कर्कट जैसा माल है। भीतर आत्मा की ही क़िमत है।

फाइल हाजिर नहीं होने पर भी उसकी याद बनी रहे वह तो बड़ा जोखिम कहलाये। फाइल गैरहाजिर होने पर याद नहीं आये पर आते ही तुरंत असर करे, वह सेकन्डरी जोखिम। हमें अपने पर उसका असर नहीं होने देना चाहिए, स्वतंत्र होना ज़रूरी है। अगर ऐसे समय पर यदि हमारी लगाम ही हाथ से छूट जाये तो फिर लगाम हाथ में रहेगी नहीं न!

छुटकारे का उपाय

प्रश्नकर्ता : सामने की फाइल (व्यक्ति) हमारे लिये फाइल नहीं, पर उनके लिये हम फाइल हैं ऐसा हमें पता चले तो हम क्या करें?

दादाश्री : ऐसा होने पर ही जल्दी से जल्दी उसे उड़ा देना। ज्यादा सख्ती दिखाना ताकि वह मोह करना ही छोड दे। इससे भी बाज़ नहीं आने पर अंटसंट बोलना। उसे धमकाना कि, 'यदि फिर से मेरे सामने आने का साहस किया तो चार थप्पड दूँगा। तुझे मेरे जैसा चक्रम दूसरा नहीं मिलेगा' ऐसा कहने पर फिर दोबारा पास नहीं आये। वह तो इसी तरह से दूर होते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा अंटसंट बोलना तो मुझे अच्छा आता है।

दादाश्री : हाँ, तुझे ऐसा रूखा बोलना बहुत अच्छा आता है और इन सभी को सिखाना पड़े। तेरे लिये ऐसा बोलना सहज है।

आकर्षणवाली फाइल से छूटने का रास्ता

प्रश्नकर्ता : यदि किसी व्यक्ति से आकर्षण संबंध में आना हुआ तो जबरदस्त अहंकार करके भी यह विषय को उड़ा देना है?

दादाश्री : हाँ, फिर अहंकार का इलाज हो सकता है पर वह विषय रोग यानी जो विप्लव होनेवाला है उसे तो वहीं दबा देना चाहिए। यह तो नीयत में खोट है इसलिये मेल बनाये रखते हैं, पर मैं माँप लेता हूँ।

प्रश्नकर्ता : नीयत में खोट है तो उसे सुधारने के लिये क्या उपाय है? निश्चय स्ट्रोंग करना यही न?

दादाश्री : हमारा जो नुकसान करनेवाला है, उससे छूटने के लिये उसके प्रति द्वेष ही रहना चाहिए, उसके प्रति कड़ी नज़र ही रहे। हम से भेंट होते ही वह डरे, उसे मालूम हो जाये कि सख़्त हो गया है। ऐसी सख़्ती दिखाना कि फिर छूए तक नहीं। किसी दूसरे को खोज निकाले।

प्रश्नकर्ता : आपके ज्ञान के बाद यह मालूम पड़ जाता है कि इसके साथ इतना सख़्त हूँ या इतना नरम हूँ।

दादाश्री : हाँ, मगर नरम रहना वह पोल है। मैं तो जानूं कि यह पोल है।

प्रश्नकर्ता : जहाँ नरम रहा जाता है वहाँ फिर कभी गुस्सेवाली वाणी निकलती ही नहीं है। दूसरी जगह तो भयंकर गुस्सा हो जाता है। आप ने बिलकुल सही बताया।

दादाश्री : नीयत चोर है। हम तुरंत ही समझ जायें, बाहर तो आप बहुत नरम लगे।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं फिर भी मेरी समझ में नहीं आता है।

दादाश्री : यह भी हमें मालूम है। हम आपको स्वीकार नहीं करते। आप चाहे कैसा भी प्रोमिस करें हम आपको स्वीकार नहीं करते। हम कब स्वीकार करें ? ऐसा वर्तन देखें तब।

प्रश्नकर्ता : यह एक बहुत बड़ी बीमारी हो गई है। अपने आप पर ज़रूरत से ज्यादा विश्वास हो गया है, झूठा...

दादाश्री : किसी प्रकार की समझ ही नहीं है। न तो अपने बारे में और न ही परायों के बारे में, समझ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यदि हम फाइल (विजातीय संबंधवाली व्यक्ति) का तिरस्कार करेंगे तो हमारे बारे में उसे गलतफ़हमी होगी ऐसा अंदर से दिखाई देता है।

दादाश्री : गलतफ़हमी होनी ही चाहिए। उसे हम पागल हैं ऐसा लगना चाहिए। किसी भी रास्ते हमें पींड छुडाना है, बाद में उसकी दवाई होगी। ऐसा करने से जो बैर खड़ा होता है, उसकी दवाई हो सकती है।

प्रश्नकर्ता : जहाँ तक एक जगह पर बंधा होता है, वहाँ तक फिर दूसरी शक्ति प्रकट नहीं होती।

दादाश्री : यह तो ज़हर है और वह भी मीठा। इसलिये फाइल आते ही सख़्ती बरतना ताकि फाइल थरथराये। 'युझलेस फेलो' ऐसा भी बोल देना अकेले में, और हमसे चिढ़ जाये तो भी हर्ज नहीं। चिढ़ने पर राग उड़ जायेगा, आसक्ति उड़ जायेगी सारी। और उसकी समझ में भी आ जाये कि अब यह हमारी पकड़ में आनेवाला नहीं है, वर्ना वह ताक में रहा करे। अब यह सब संभालना।

विषय संबंधी फाइल तो हमारे नझदीक आते ही अंदर कड़वाहट हो जानी चाहिए कि इस समय यह कहाँ से आई? मगर भीतर नीयत चोर है। इतना ही सावधान रहने योग्य है।

दादा के अलावा कोई छू नहीं सकता

हम तो आप जो माँगे सो देने को तैयार है, क्योंकि अपने आप में हम अखंड ब्रह्मचारी हैं। ज्ञान होने के बाद, आज अट्ठाइस साल से, एक दिन के लिये भी स्त्री संबंधी कोई विचार ही नहीं आया है। इसलिये स्त्रियाँ हमारा चरण स्पर्श कर सकती हैं वर्ना स्त्रियों को छू नहीं सकते। हमारे पचास हजार महात्माओं में से किसी को ऐसी अनुमति नहीं है कि तुम (पर) स्त्री को छूना, क्योंकि उस स्पर्श का प्रभाव बहुत बुरा है। ऐसा नहीं है कि सभी ऐसे हैं लेकिन हो सके वहाँ तक इसमें हाथ डालने जैसा नहीं है। हमें अनुमति है क्योंकि हम किसी जाति में नहीं होते। न तो पुल्लिंग, न ही स्त्रीलिंग, हम सभी जाति से परे हैं। हम जाति से बाहर निकल चूके होते हैं।

स्त्री-पुरुषों को परस्पर छूना नहीं चाहिए, उसमें बडा जोखिम है। जहाँ तक पूर्ण नहीं हुए हैं, वहाँ तक छू नहीं सकते। वर्ना विषय का एक परमाणु यदि अंदर प्रवेश कर जाये तो कितने ही भवों को बिगाड़ देगा। हमारे में तो विषय का परमाणु ही नहीं होता। एक भी परमाणु बिगड़ने पर तुरंत प्रतिक्रमण करना पड़े। प्रतिक्रमण करने से सामने की व्यक्ति को (विषयी) भाव उत्पन्न नहीं होता।

(पर)स्त्री को छूने पर उसके परमाणु का असर हुए बिना नहीं रहता। परस्त्री को यदि ज़रा-सा भी छू लिया तो घंटेभर प्रतिक्रमण से धोना पड़े। अकेले 'ज्ञानी पुरुष' ने विषय के सारे बीज उखाड़कर फेंक दिये होते हैं। उनमें विषय का बीज ही नहीं होता। छूने का अधिकार किसे है? नौवाँ गुणस्थानक जिसने पार किया है उसे। क्योंकि उसे तो विषय संबंधी विचार तक नहीं आता, विचार ही बंद है न? ऐसा होने के बाद ही उसके दिमाग में सारे ऊर्ध्व विचार ही होते हैं, सारी शक्तियाँ ऊर्ध्व ही होती हैं।

यह ज्ञान होने के बाद हमें कभी विषय का विचार नहीं आया है। विषय का विचार नहीं आता हो,

जिसका मनोबल जबरदस्त ज्ञानमय हो गया हो, उसके लिये हर्ज नहीं है। इसीलिये स्त्रियाँ हमारे चरण छूकर विधि कर सकती है न? पर अन्य किसी पुरुष को स्त्रियों को छूने की अनुमति नहीं और स्त्रियों को भी किसी पुरुष को छूने की अनुमति नहीं, छू ही नहीं सकते। दूसरों को छूने से पहले ही विषय विचार खड़ा हो जाये। हमें तो एक ही सेकिन्ड में 'थ्री विझन' के द्वारा सब आरपार दिखाई देता है। हमारा दर्शन इतना ऊँचा होता है, फिर रोग कैसे खड़ा होगा?

हमें पुद्गल के प्रति राग ही नहीं है। यह हमारे ही पुद्गल के प्रति हमें राग नहीं है। पुद्गल से मैं सर्वथा अलग ही रहता हूँ। खुद के पुद्गल के प्रति जिसे राग होता है, उसे अन्य के पुद्गल के प्रति राग होगा। अनंत अवतारों से यही का यही भोगने के बावजूद यह छूटता नहीं है, यह भी एक अजूबा ही है! कितने ही अवतारों से विषय सुख का विरोधी हो, विषयसुख को आवरणिक दृष्टि से परे होकर बहुत बहुत सोचा हो, जबरदस्त वैराग्य उत्पन्न हुआ हो, तभी वह छूटे। वैराग्य कब उत्पन्न होता है? उसे भीतर जैसा है वैसा ही दिखाई दे तब।

वर्तन की भूल न चले

इस विषय को लेकर संयोग होने से हमारी नज़र कड़वी नज़र में बदल जायेगी। हमें तुरंत सब पता चल जाता हैं। दादाजी की नज़र कड़वी रहती है, वह भी एक विषय को लेकर ही, अन्य मामलों में नहीं। अन्य मामलों में कड़वी नज़र नहीं रखते। अन्य भूलें होती रहें पर 'यह' तो नहीं ही होनी चाहिए। यदि पहले हो गई हो तो हमें बता देना, हम ठीक कर देंगे, छूडा देंगे।

प्रश्नकर्ता : यहाँ दादाजी के पास तो हर तरह से छूटने के लिए ही आना है।

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। इसीलिये तो इन आप्तपुत्रों से मैं ने लिखवा लिया है ताकि मुझे निकाल बाहर करना नहीं पड़े, अपने आप ही चले जाना।

जो विषय 'संयोग' रूप से (व्यभिचार) होता हो न, उस पर हमारी कड़वी नज़र होने से वह छूट जाता है, अपने आप ही। हमें डाँटना नहीं पड़ता। ऐसी कड़वी नज़र पड़े कि उसे ताप से रातभर नींद नहीं आती। वह सौम्यता का ताप कहलाये। प्रताप का ताप तो जगत के लोगों के पास है। प्रताप में तो चेहरे पर तेज होता है सारा, अच्छा ब्रह्मचर्य हो, शरीर बलवान हो, वाणी प्रतापशील हो, वर्तन में प्रभाव हो, ऐसा प्रताप तो संसार में होता है पर सौम्यता का ताप किसी के पास नहीं होता है। सूर्य और चंद्र, दोनों के गुण एक साथ आ मिले तब काम होता है। अकेले प्रतापी पुरुष होते हैं, मगर कम, ऐसे दुषमकाल में तो होते ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : और हमारा यह ज्ञान ही ऐसा है कि अंदर से ही चुभता रहे और सावधान करता रहे।

दादाश्री : हाँ, अंदर ही चुभता रहे।

प्रश्नकर्ता : मतलब ज़रा-सा भी इधर-उधर होते ही भीतर शोर मच जाये कि यहाँ चूके, लौट चलो यहाँ से। अर्थात हमें अंदर सेफ में (आत्मा की ओर) खिंच लाये।

दादाश्री : हारने की जगह आने पर मुझे बता देना। एक अवतार अपवित्र नहीं हुआ तो मोक्ष हो गया, हरी झंडी और अगर शादी करोगे तो भी हर्ज नहीं है, मोक्ष में आपत्ति नहीं आयेगी।

प्रश्नकर्ता : हमने इच्छापूर्वक किसी को छू लिया तो वर्तन में आया कहलाये न?

दादाश्री : इच्छापूर्वक छूने पर? फिर तो वर्तन में आया ही कहलाये न? इच्छापूर्वक अंगारों को छूकर देख लेना न!

प्रश्नकर्ता : ख्याल में आ गया।

दादाश्री : उसके बाद आगे की इच्छा तो, इच्छा होते ही उसे निकाल देनी चाहिए। जड़ निकलते ही, बीज उगते ही समझ जायें कि किसका बीज उगने

लगा है? तब कहे, विषय का। तो उसे उखाडकर तोड देना। वर्ना छूने से आनंद हुआ मतलब खतम हो गया। वह मनुष्य का जीवन ही नहीं है। अब कानून समझकर सबकुछ करना। जिसे वर्तन में आया उसे हम मना कर देते हैं, क्योंकि वर्ना यह संघ टूट जाये। संघ में तो विषय की दुर्गंध आती ही नहीं। मतलब ऐसा होने पर मुझे बता देना। शादी करने पर भी उपाय है, शादी करने पर मोक्ष नहीं होगा ऐसा नहीं है। तुझे उपाय रहे ऐसा कर देंगे।

स्पर्शसुख, वह बिगडी मान्यता का दोष

प्रश्नकर्ता : स्त्री को स्पर्श करने में सुख नहीं है यह बात जो आपने बताई थी, वह समझ में तो आती है फिर भी व्यवहार में जब स्पर्श हो जाता है तो अच्छा लगता है। इसका क्या करना? इसका क्या उपाय है?

दादाश्री : वह तो सुख लगेगा पर हम उसे तुरंत हटा दें न, हमें क्या? जो सुख लगता है वह तो हमारी बिलिफ है इसलिये, वर्ना औरों को तो स्पर्श होते ही ज़हर जैसा लगे। कुछ लोग तो स्त्री को छूते तक नहीं, ज़हर समान लगे उन्हें, क्योंकि उन्हों ने ऐसा भाव किया है। दूसरा जो उसमें सुख मानता है उसने ऐसा माल भरा है। उन दोनों ने अलग-अलग माल भरा है, इसलिये इस जनम में ऐसा होता है। ज़हर भी नहीं लगना चाहिए और सुख भी नहीं लगना चाहिए। हम जैसे साहजिक रूप से पुरुषों को छूते हैं वैसे ही स्त्री को छूते है ऐसा रहना चाहिए। विषय में स्त्री दोषी नहीं है, वह हमारा दोष है।

पवित्रता बनाये कल्याण का निमित्त

जो ब्रह्मचर्य का निश्चयवाला है वह संयम रख सकता है। ज्ञानी पुरुष का सिर पर आधार है, ज्ञान लिया है उसका सुख तो भीतर होगा ही न, फिर क्यों जान-बूझकर कुँए में गिरना?

मैं तो (आप्तपुत्रों को) कहता हूँ, 'शादी कर लो आराम से !' पर कहते हैं कि, 'शादी नहीं करनी।' मैं मना नहीं करता। तुम शादी करो। शादी करोगे तो भी तुम्हारा मोक्ष होगा यानी हमारे सिर पर इलज़ाम नहीं आये। ऐसा कहने पर कहते हैं, 'हमें बहू नहीं पुसाती।' ऐसा खुलासा करते हैं न? तुम्हें बहू नहीं पुसाती हो उसमें मैं क्या करूँ? मतलब, तुम्हें पुसाता हो तो शादी करना और नहीं पुसाये तो मुझे बताना।

भीतर माल भरा हो तो फिर शादी करके उसका हिसाब पूरा करो। शादी करने पर कोई हमेशा के लिये (आत्मा का) थोड़े ही पति हो जाता है? ज्ञान से संसार से छूटने के अनेकों रास्ते होते हैं।

मन बिगड़ने पर प्रतिक्रमण करने चाहिए, वह भी शूट ऑन साइट करने चाहिए। मन से होनेवाले दोष चला लेंगे। उसका हमारे पास उपाय है, उसका प्रयोग करके हम धो देंगे। वाणी से और काया से होनेवाले दोष नहीं चला सकते। पवित्रता चाहिये ही। अपवित्रता तो कतई नहीं चलेगी। यहाँ सर्वथा पवित्र पुरुषों का ही काम है। पवित्रता रहेगी तो वहाँ से भगवान इधर-उधर नहीं होंगे।

मैं ने सभी से कहा है कि भैया, ऐसा पोल तो नहीं चलेगा। वह अनिश्चय है, आप्तपुत्रों ने शादी नहीं की पर निश्चय है इसलिये वर्तन बिगड़ने नहीं देना। देखिये, पवित्र लोग पैदा हुए हैं, जगत का कल्याण करेंगे। जिस स्त्री-पुरुष में विकार नहीं हो, वे पवित्र कहलायें।

किसी कार्य का आप जितना मुआवजा देंगे, उससे ज्यादा मुआवजा आपको मिलेगा। इसलिये जगत कल्याण करना। जगत का कल्याण होगा और अपना खुद का भी। संसार में रहने लायक कोई स्थान ही नहीं था। अब यह ज्ञानी पुरुष का शरण मिला वही रहने लायक स्थान है।

चारित्र्य का सुख कैसा आश्चर्यकारी बरते

ज्ञानी पुरुष के पास चारित्र्य ग्रहण करे, मात्र ग्रहण ही किया है, अभी पालन तो हुआ ही नहीं, तब से बहुत आनंद उमड़ने लगे। तुझे कुछ आनंद उमड़ा है?

प्रश्नकर्ता : उमड़ा है न दादाजी। उसी क्षण से ही भीतर सारा उजाला फैल गया है।

दादाश्री : लेने के साथ ही सारे बादल हट गये न? लेते समय मन क्लिअर होना चाहिए। उसका मन क्लिअर हुआ यह मैं ने तलाश की थी। इसे कहते हैं, चारित्र्य ग्रहण करना! व्यवहार चारित्र्य! और 'देखना-जानना' रखें, वह निश्चय चारित्र्य! चारित्र्य का सुख जगत समझा ही नहीं है। चारित्र्य का सुख ही अलग तरह का होता है।

अब हम यह स्थूल चारित्र्य की बात बता रहे हैं। यह चारित्र्य जिसमें उत्पन्न होता है वह बहुत पुण्यशाली कहलाये। उसने ब्रह्मचर्य व्रत की आज्ञा ली थी, इसलिये उसे आनंद भी कैसा रहता है!

प्रश्नकर्ता : ऐसा आनंद तो मैं ने किसी काल में देखा नहीं था। निरंतर आनंद रहता है।

दादाश्री : आज इस काल में तो लोगों के चारित्र्य ही खतम हो गये हैं। कहीं अच्छे संस्कार नहीं रहे। यह तो यहाँ आ पहुँचे और फिर यह ज्ञान मिला इसलिये सही रास्ता मिल गया। ये तो पुण्यशाली है, वर्ना कहाँ से कहाँ भटककर मर गये होते। यदि मनुष्य का चारित्र्य बिगड़ जाये तो लाइफ युझलेस (जिंदगी निकम्मी) हो जाये। दु:खी-दु:खी हो जाये। वरीझ, वरीझ, वरीझ, रात को नींद में भी वरीझ (चिंता)! और यहाँ तो उनको बहुत आनंद रहा करे!

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, पहले तो जीने जैसा ही नहीं था।

दादाश्री : ऐसा? अब जीने जैसा लगता है? घर के सभी की इच्छा हो कि लड़का चारित्र्य ग्रहण करे, तो ऐसा उसके 'व्यवस्थित' (सायंटिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स) में है, ऐसा समझ में आये। वही सबूत है। फिर हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करते। 'व्यवस्थित' में होने पर ही घर के सभी लोगों की ऐसी इच्छा रहती है। किसी की भी आपत्ति हो तो 'व्यवस्थित परिवर्तित हुआ लगे।' 'व्यवस्थित' माने क्या? किसी को आपत्ति नहीं। सभी हरी झंडी ही दिखाये, तब समझना कि यह ऐसा 'व्यवस्थित' है।

ब्रह्मचर्य की आज्ञा के बाद कोई बम गिराने (विषय विकार के अटेक करने) आये तो हम सावधान हो जायें। यह आज्ञा मिली है वह तो बहुत बड़ी चीज़ है। इस आज्ञा के पीछे दादाजी की बहुत शक्ति खर्च होती है। यदि तुम्हारा निश्चय नहीं छूटता तो दादाजी की शक्ति तुम्हें हेल्प करेगी और यदि तुम्हारा निश्चय छूट गया तो दादाजी की शक्ति तुमसे अलग हो जायेगी। ब्रह्मचर्य तो बहुत बड़ा खज़ाना है। लोग तो लूट लें, छोटे बच्चे को बेर देकर कडुला निकाल लें, उसके जैसा है। बच्चा बेर के लालच में आ जाये और कडुला दे दे, ऐसे ही जगत इस लालच में फँसा है।

ब्रह्मचर्य व्रत लेने के बाद आनंद बहुत बढ़ गया है न? अव्रत को लेकर ही सारा झमेला खड़ा हुआ है। उसके कारण आत्मा के सच्चे स्वाद का पता नहीं चलता है। महाव्रत का आनंद तो अलग ही है न? आनंद तो बाद में बहुत बढ़ेगा, अपार आनंद होगा।

देह छूटे पर निश्चय नहीं छूटे

पहले के समय में चारित्र्य की स्थिरता आज के जैसी (ढुल-मुल) नहीं थी। यह आज तो बेहोश लोग हैं। ज्ञान लेने के बाद यदि विषय की आराधना हो तो क्या होता है? सत्संग के साथ दगा किया और ज्ञानी के साथ दगा किया, परिणाम, नर्क में जाना पडे यहाँ से। यहाँ दंड ज्यादा मिलता है, क्या कारण होगा उसका?

प्रश्नकर्ता : जिम्मेदारी है न?

दादाश्री : नहीं, इस सत्संग से दगा किया, ज्ञानी से दगा किया। वह बडा दगाबाज़ कहलाये। ऐसा तो कहीं होता होगा? क्या खुद को मालूम नहीं कि यह गलत है, ऐसा? यह तो जान-बूझकर चलाते रहे कि कोई हर्ज नहीं, नहीं तो फिर 'समभाव से निपटारा' करने का दुरुपयोग करे, या तो 'व्यवस्थित है' मानकर दुरुपयोग करे। पहले आपने ऐसा सब सुना नहीं था?

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो सुनने में नहीं आया।

दादाश्री : अब आपको यह सब लक्ष में रहेगा कि छूट जायेगा? हमें ऐसा नहीं होना चाहिए। वर्ना ऐसा हो जाये कि कहीं मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहते। हमें यह शोभा नहीं देता। अहंकार को लेकर कुछ हो जाये और कर्मबंधन हो तो समझे उतना 'ऑवर ड्राफट' लिया। पर विषय तो चाहिए ही नहीं, ऐसा होना चाहिए। जो विषय की आराधना करता हो, उसे चारित्र्य की क़ीमत ही नहीं होती। उसकी अपनी बीवी-बेटी कहीं भी जाये तो उसे दिक्कत नहीं होती।

अब, अपना जीवन सुआयोजित कर लीजिये। आखिर में कल अगर यह देह छूट जायेगी तो विषय अपने आप छूटनेवाला ही है न? इसके बजाय जीवित अवस्था में ही छोड़ दें तो उसमें बुरा क्या है? कुदरत मार-पीटकर करवाये, इसके बजाय हम ही छूट जाये इसमें से। यह विषय का कर्म जिसने रोका, उसके फल स्वरूप दूसरा कर्म बंधता है। इसलिये भले ही वह सहजभाव नहीं कहलाता और फल स्वरूप दूसरा फर्ज बनता हो पर यह विषय के फर्ज की तुलना में वह दूसरा फर्ज उतना भारी नहीं है।

चारित्र्य की नींव, मोक्षपंथ का आधार

हमारे यहाँ पर ज्ञान लेने के बाद क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते। इसलिये यह व्यवहार चारित्र्य बहुत ऊँचा कहलाये। क्रोध-मान-माया-लोभ जो होते हैं वे निपटारे के मामले में होते हैं, जो निर्जीव है। मतलब वास्तविक क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं है, इसलिये यह व्यवहार चारित्र्य बहुत उच्च कोटि का कहलाये। मगर ब्रह्मचर्य ठीक से नहीं सँभलने के कारण सारा चारित्र्य कच्चा पड़ जाता है। अब ब्रह्मचर्य कुछ ऐसा ज़ोर लगाकर खिंच लाने जैसा नहीं है। ब्रह्मचर्य अपने-आप सहज भाव से उदय में आने पर काम होगा। हमारा भाव ब्रह्मचर्य का होना चाहिए। जहाँ तक ब्रह्मचर्य का ठीक से पालन नहीं होता, वहाँ तक यह पौद्गलिक सुख और आत्म सुख - दोनों के बीच का भेद यथार्थ समझना मुश्किल है।

व्यवहार चारित्र्य माने किसी स्त्री को कोई दुःख ही नहीं हो ऐसा वर्तन करना, किसी स्त्री के प्रति दृष्टि नहीं बिगाडना। मर्यादित चारित्र्य ग्रहण करना भी अच्छा कहलाये। इससे अभ्यास तो होगा न? चारित्र्य ग्रहण किया मतलब झंझट से छू गये। फिर विचारों को भी ऐसा लगे कि इनको अपमान लगेगा, इसलिये जान-बूझकर थोड़े आयेंगे (विषय संबंधी विचार आना धीरे धीरे बंद हो जायेगा, अपने आप)।

'ज्ञानी पुरुष' के आधार पर चारित्र्य वह तो सबसे बड़ी बात है। जब कि, 'ज्ञानी पुरुष' का चारित्र्य तो बहुत ही उच्च कोटि का होता है, उनका मन भी कभी विचलित नहीं होता।

विषय का विचार तक आना नहीं चाहिए और यदि आ जाये तो उसे धो डालना चाहिए। विषय का भाव अकेले मन में ही उत्पन्न हो, पर वाणी में नहीं हो, वर्तन में नहीं हो। यदि कभी मन में ज़रा-सा विचार आ जाये तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना। यह व्यवहार चारित्र्य कहलाये। निश्चय चारित्र्य में तो भगवान हो गया है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार चारित्र्य के लिये विशेष क्या करना होगा?

दादाश्री : कुछ नहीं। व्यवहार चारित्र्य के लिये और तो क्या करना? ज्ञानी की आज्ञा में रहना यह व्यवहार चारित्र्य और यदि इसमें ब्रह्मचर्य की आपूर्ति हो तो सोने पे सुहागा, बहुत उत्तम कहलाये और तभी सही चारित्र्य कहलाये। ब्रह्मचर्य नहीं हो तो पूर्ण चारित्र्य नहीं कहलाता, व्यवहार चारित्र्य की पूर्णाहुति नहीं होती। ब्रह्मचर्यव्रत की आपूर्ति होने पर 'व्यवहार चारित्र' की पूर्णाहुति होती है।

शीलवान के लक्षण

प्रश्नकर्ता : शीलवान के क्या-क्या लक्षण होते हैं?

दादाश्री : शीलवान में मोरालिटी, सिन्सियारिटी

और ब्रह्मचर्य तो होते ही हैं, उपरांत उसमें सहज नम्रता होती है। सहज नम्रता माने नम्रता करनी नहीं पड़ती, किसी के भी साथ साहजिक रूप से नम्र होकर बात करें। फिर सहज सरलता होती है। सरलता करनी नहीं पड़ती। जैसे मोड़ना चाहो मुड जाये। उसका संतोष भी सहज होता है। ज़रा-सा भात और कढ़ी परोसने पर आँख उठाकर नहीं देखता, उतने में ही संतोष कर लेगा, ऐसा सहज संतोष। उसकी क्षमा भी सहज होती है। उसका परिग्रह, अपरिग्रह दोनों सहज होंगे। मतलब इस प्रकार ये सारी बातें सहज होने पर समझना कि यह भाईजी शीलवान हो गये हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा शीलवान पुरुष मोक्ष का अधिकारी होगा?

दादाश्री : वही दूसरों को मोक्ष दे सकता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो बिना ज्ञान के संभव ही नहीं है। शील भी बिना ज्ञान के संभव नहीं है न?

दादाश्री : वह सब (ज्ञान और शील) एक ही है और उसी वस्तु को अलग से देखा जाये तो ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : सहज क्षमा। अब मैं क्षमा करता हूँ।

दादाश्री : ऐसी क्षमा काम नहीं आती। आये बड़े क्षमा करनेवाले। सहज होना चाहिए। हम थप्पड मारें और फिर उसकी आँखों में देखे, तो वहाँ क्षमा टपकती हो उसे क्षमा कहते हैं। 'मुझे क्षमा चाहिए' ऐसा कहना नहीं पड़ता। हमारे थप्पड मारने पर उसकी आँखों में क्रोध नहीं होता।

अंत में शीलवान दशा सिद्ध होती है

शीलवान माने क्या? कोई गालियाँ सुनाने आया हो और यहाँ आकर चूप होकर बैठा रहे। हम कहें कि, 'कुछ बोलिये, बोलिये न?' पर उसके मुँह से एक अक्षर भी न निकलने पाये! ऐसा होता है शील का प्रभाव! यानी यदि हम (प्रतिकार की) तैयारी करें तो शील टूट जाये। मतलब तैयारी नहीं करना। जो करना चाहें वह करें। सब जगह 'मैं ही हूँ' ऐसा कहना।

प्रश्नकर्ता : पर हमें वहाँ खिंचकर ले जाने के प्रयत्न होते हों तो?

दादाश्री : वह चाहे लाख प्रयत्न करे खिंच ले जाने के पर हमें नहीं खिंचा जाना तो उसकी एक नहीं चलेगी।

प्रश्नकर्ता : मगर ऐसा नहीं खिंचा जाना है, यह संकल्प में तो रहना ही होगा न?

दादाश्री : नहीं। वह नहीं खिंचा जाना वह भी हमें अपने स्वाधीन ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : मतलब अपनी सहज स्थिति में ही रहना?

दादाश्री : हाँ, सहज स्थिति में ही और संयोगवश जाना पडा, ऐसा कहीं खिंच जाना पड़े, तो फिर से उसके प्रति हमें कोई सरोकार नहीं रखना है।

प्रश्नकर्ता : तन्मयाकार नहीं होना?

दादाश्री : उसमें कतई तन्मयाकार नहीं होना। पहले शील उत्पन्न होने दो। यह 'ज्ञान' देने के बाद मनुष्य दिन-ब-दिन शीलवान होता जाये। बाहर जिसे लोग प्रभावशाली कहते हैं वह तो बहुत छोटी वस्तु है। ऐसा प्रभाव तो बाहरी लोगों में भी होता है। पर शीलवान तो भगवान के आगे भी इन्फिरीयारिटी कॉम्प्लेक्स (लघुताग्रंथि) महसूस नहीं करता। जिसे भगवान के आगे इन्फिरीयारिटी कॉम्प्लेक्स महसूस नहीं होता, उसे मनुष्यों के आगे तो लगता ही नहीं। शीलवान! शील तो हर तरह से रक्षा करे। देवलोक से रक्षा करे, जानवरों से भी रक्षा करे, हर किसी से रक्षा करे, इसलिये शील तो अनिवार्य ही है।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

अडालज स्थित त्रिमंदिर में श्री सांईबाबा और पद्मनाभ प्रभुजी की प्राणप्रतिष्ठा का भव्य समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न

अडालज स्थित, परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित निष्पक्षपात त्रिमंदिर में दिनाँक २९ दिसम्बर २००६ के दिन संत शिरोमणि श्री सांईबाबा और भावि चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ प्रभुजी की प्राणप्रतिष्ठा का भव्य समारोह, आत्मज्ञानी पूज्य श्री दीपकभाई देसाई की निश्रा में आयोजित किया गया था। देश-विदेश से आये हजारों महात्माओं की उपस्थिति में पूज्य श्री दीपकभाई देसाई ने प्रारंभ में देवी-देवताओं का आह्वान करता भक्तिपद गाकर समारोह का प्रारंभ किया था। प्रातः ४ बजे से ६ बजे की समयावधि में पूज्य श्री दीपकभाई ने श्री पद्मनाभ प्रभुजी और सांईबाबा की प्राणप्रतिष्ठा विधि की थी। आपने मंदिर के पोडीयम से, मंदिर के प्रांगण में उपस्थित महात्माओं के सामने परम पूज्य दादा भगवान और पूज्य नीरू माँ को प्राणप्रतिष्ठा के लिये निमंत्रित करते हुए और तीर्थंकर भगवंतों की महिमा गाते हुए भक्तिपदों का गान किया था। जिसे सुनकर उपस्थित जनसमुदाय भावविभोर होकर नाच उठा था। इसके पश्चात श्री पद्मनाभ प्रभुजी और श्री सांईबाबा का प्रक्षाल-पूजन-आरती की गई थी। सुप्रसिद्ध गज़ल गायक श्री मनहर उधास और सूरमणि एवॉड विजेता डॉ. मोनिकाबहन शाह ने अपनी सुमधुर आवाज़ के जादू से जनसमुदाय को भक्तिरस में डुबो दिया था। इस प्राणप्रतिष्ठा समारोह का जीवंत प्रसारण समग्र विश्व में सुबह ६-३० से १०-३० के दरमियान 'आस्था' चैनल पर किया गया।

श्री सांईबाबा और श्री पद्मनाभ प्रभुजी की संगमरमर की अति रमणीय, दर्शनीय प्रतिमाएँ जयपुर से लाई गई थी। जिनमें श्री सांईबाबा की प्रतिमाजी की ऊँचाई ७६ इंच और श्री पद्मनाभ प्रभुजी की प्रतिमाजी की ऊँचाई ८१ इंच है, दोनों प्रतिमाओं का वजन करीब ४ टन जितना है।

सभी उपस्थित दर्शनार्थीओं को, निष्पक्षपात त्रिमंदिर और तीर्थंकर भगवंतों की महत्ता समझाते हुए पूज्य श्री दीपकभाई ने जगत कल्याण की भावना प्रदर्शित की थी। त्रिमंदिर में श्री सांईबाबा का स्थापन लोगों के आत्मज्ञान पाने के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को दूर करने हेतु किया गया है। आनेवाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ प्रभुजी की प्रतिमाजी का स्थापन भी लोगों के आत्मकल्याण हेतु ही किया गया है। जैसे वर्तमान में अरिहंत भगवान श्री सीमंधर स्वामी लोगों के लिए मोक्षमार्ग के परम निमित्त हैं, वैसे ही श्री पद्मनाभ प्रभुजी भी इस क्षेत्र के लोगों के मोक्षमार्ग के उद्धारक होंगे। इसलिये श्री सांईबाबा और श्री पद्मनाभ प्रभुजी का स्थापन लोगों को मुक्ति के, मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होने में अत्यंत लाभदायी सिद्ध होंगे।

अडालज स्थित त्रिमंदिर की चौथी सालगीरह भी इसी दिन पड़ती थी। २००२ में इसी दिन मूलनायक वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी, श्री शिव भगवान और श्री कृष्ण भगवान के त्रीरुप - योगेश्वर, श्रीनाथजी, तिरूपति बालाजी के साथ भगवान ऋषभदेव, महावीर स्वामी, हनुमानजी, गणेशजी, माँ पद्मावती, माँ अंबा आदि देवी-देवताओं और भगवंतों की प्राणप्रतिष्ठा की गई थी।

रात में भक्ति के विशेष कार्यक्रम में श्री सीमंधर स्वामी, परम पूज्य दादा भगवान और श्री सांईबाबा के गुणगान की सुमधुर सूरावलि से सारा परिसर गुँज उठा था।

दिनाँक ३० दिसम्बर के दिन ३००० से भी अधिक मुमुक्षुओं ने पूज्य श्री दीपकभाई की निश्रा में आत्मज्ञान पाया था। सारा त्रिमंदिर, मंदिर का परिसर और सत्संग हॉल महात्माओं से खचाखच भर गये थे।

पूज्य दीपकभाई देसाई के सान्निध्य में होनेवाले सत्संग कार्यक्रम

अंजार (कच्छ)

१२ तथा १४ फरवरी, शाम ५ से ७-३० तथा १३ फरवरी, शाम ४ से ७ - **'ज्ञानविधि'**
स्थल : यदुवंशी सोरठिया समाज वाडी, भरेश्वर महादेव के पास, महादेवनगर के पास. फोन : 9925142180

भूज (कच्छ)

१६-१७ फरवरी, शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा १८ फरवरी (रवि), दोपहर ३ से ७ - **'ज्ञानविधि'**
स्थल : ओलफ्रेड हाइस्कूल, बस स्टेशन के पास, हमीरसर तालाब के पास. फोन : 02832-231636

नैरोबी (केन्या)

२२ से २४ फरवरी, रात्रि ८ से १० - सत्संग तथा २५ फरवरी (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **'ज्ञानविधि'**
स्थल : विसा ओशवाल सेन्टर आडिटोरियम, रिंग रोड, नकुमत उकाय के सामने, नैरोबी.
फोन : +254 726 277 708, +254 733 585 401, email: appin92@yahoo.co.uk

नकुरु (केन्या)

१ से ३ मार्च, रात्रि ८ से १०-३० - सत्संग तथा ४ मार्च (रवि), शाम ४ से ७ - **'ज्ञानविधि'**
स्थल : विसा ओशवाल कम्युनिटि होल, नकुरु.

नकुरु में सत्संग शिविर (केन्या)

९ से ११ मार्च, सुबह १० से १ तथा शाम ४ से ७, स्थल : सोलाइ फार्म, नकुरु टाउन के पास.
फोन : +254 734 596 546, +254 722 840 123, email: maldekundan@gmail.com

दुबई (यु.ए.ई.)

१३ से १५ तथा १७ मार्च, रात ८ से १० - सत्संग तथा १६ मार्च (शुक्र), शाम ६ से ९ - **'ज्ञानविधि'**
स्थल : सिंधी सेरेमोनियल होल, ओफ कोसमोस लेन, टीपटोप के पीछे, मीना बाजार, बर दुबई.
फोन : +971 50 675 4832, email: dhirenmshah@hotmail.com

पूज्य नीरूमाँ को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

भारत □ 'दूरदर्शन' (नेशनल) पर सुबह ८-३० से ९ (सोम से शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह'
इसी समय देखिए, तमिलनाडु में तमिल भाषा में... तथा केरल में मलयालम भाषा में...
□ 'दूरदर्शन' डीडी-१ प्रतिदिन दोपहर ३-३० से ४ (गुजरात में) (अन्य राज्यो में डीडी ११ पर वही समय)
□ □ 'आस्था इन्टरनेशनल' प्रतिदिन दोपहर १ से १-३० - गुजराती में (समय में परिवर्तन)

U.S.A. : □ □ 'TV Asia' Everyday 7 to 7-30 AM EST (In Gujarati)
□ □ 'TV 39 (NJ)' Mon-Fri 6 to 7 PM & Sat 6 PM to 6-30 PM (In Gujarati)
Canada: □ □ 'ATN' Every Wed-Thu 8.30 to 9.00 AM EST

□ □ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३०, (हिन्दी में)
□ □ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) सुबह ७-३० से ८

पूज्य दीपकभाई को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

भारत □ 'दूरदर्शन' डीडी-११ पर प्रतिदिन रात्रि ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश'
□ 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) रात्रि १०-३० से ११, (शनि-रवि) सुबह ३ से ३-३०
समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) शाम ५ से ५-३०, शनि-रवि सुबह ८-३० से ९

जनवरी २००७
वर्ष-२, अंक - ३

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/17258/05
Reg. No. GAMC - 1500 & FGN No. 1578
Valid up to 31-12-08
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

हमें तीन प्रकार के तीर्थंकरों के दर्शन करने चाहिए। भूतकालीन जो चौबीस तीर्थंकर हो गये, उनके शासन देवी-देवता कार्यरत हैं और उनकी इच्छा है कि सारे हिन्दुस्तान का कल्याण हो। मैं तो उसमें निमित्त बन गया हूँ। यह सीमंधर स्वामी जो वर्तमान तीर्थंकर है, उनके दर्शन करना, तो आपका कल्याण होगा। और भावि तीर्थंकर, श्रेणिक राजा जो हो गये, वे आनेवाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभ के रूप में यहाँ होनेवाले हैं। यह तो लोगों का कल्याण हो इसलिए ही है।

-दादाश्री

श्री पद्मनाभ प्रभु

श्री सांईबाबा

हमसे कोई पूछे कि, 'हम दुःखी हैं तो हमें क्या करना चाहिए, किसे भजना? तब मैं ने बताया, शिरडीवाले सांईबाबा को भजना।' सांईबाबा बहुत कार्य कर रहे हैं, क्योंकि वे ऐसे औलिया है कि बात ही मत पूछना ! यानी आज भी लोगों को सुख प्रदान कर रहे हैं। उनका एक ही काम है कि लोगों को दुःखों से कैसे उबारना ! प्यार और औलिया पुरुष। ममतारहित फ़कीर, जो लोक कल्याण में ही रत होते हैं। आज भी उतना ही फल देते हैं।

-दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Basement of Parshwanath Chambers,
Nr. New R.B.I. Income Tax Area, Ahmedabad - 14 and published from Registered Address of the Trust